

Think
IAS...

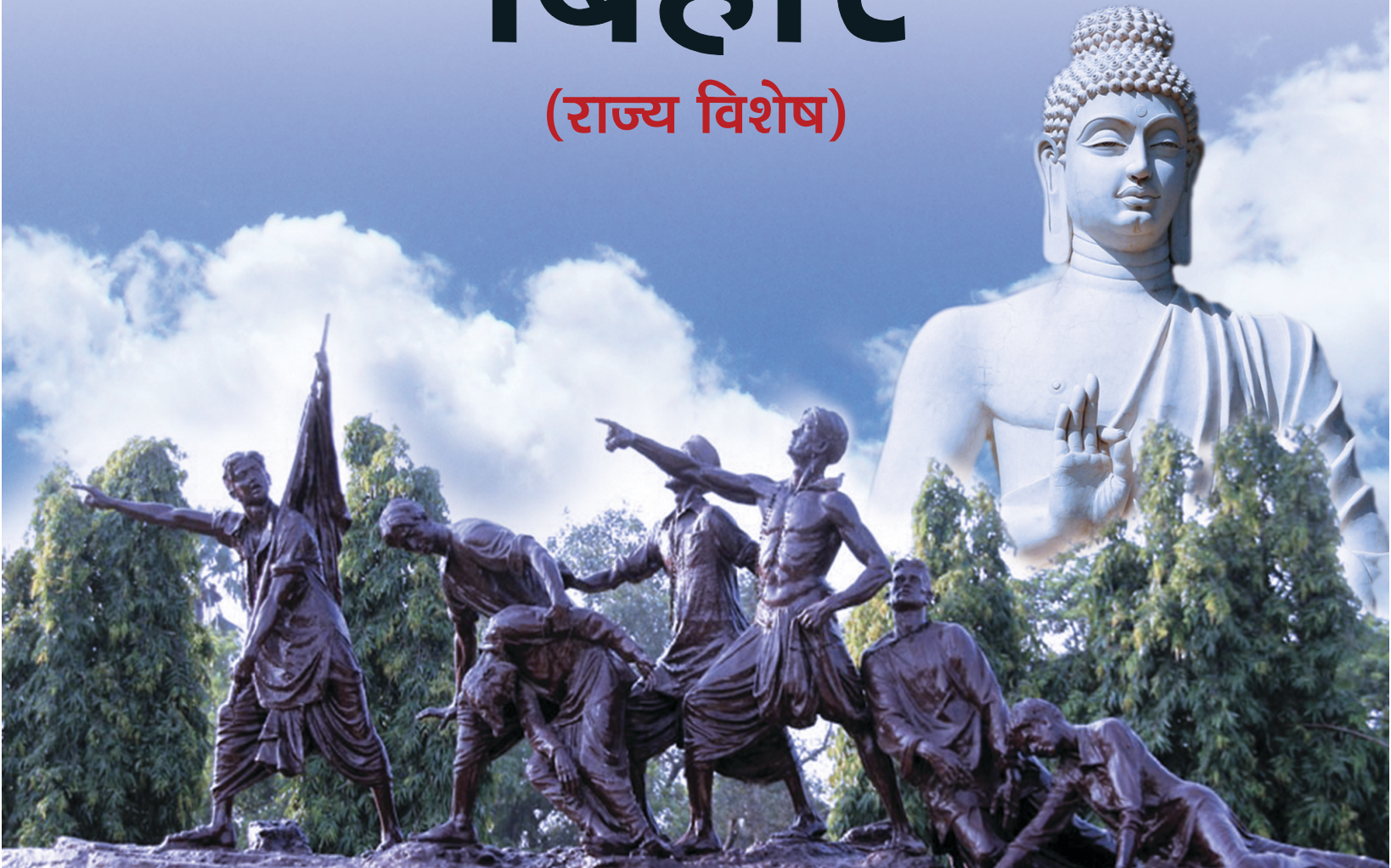


Think
Drishti

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

बिहार

(राज्य विशेष)



दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: BRPM01



बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

बिहार (राज्य विशेष)



641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें



www.facebook.com/drishtithevisionfoundation



www.twitter.com/drishtiiias

1. बिहार : सामान्य परिचय	5-9
2. बिहार : प्राचीन इतिहास	10-15
3. बिहार : मध्यकालीन इतिहास	16-18
4. बिहार : आधुनिक इतिहास	19-60
5. बिहार : भौगोलिक स्थिति व उच्चावच	61-65
5.1 बिहार की भौगोलिक स्थिति	61
5.2 बिहार में प्राकृतिक उच्चावच	62
6. बिहार : जलवायु एवं मृदा	66-70
6.1 जलवायु	66
6.2 मृदा/मिट्टी	67
7. बिहार : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई	71-80
7.1 नदियाँ	71
7.2 सिंचाई	74
8. बिहार : कृषि व पशुपालन	81-93
8.1 कृषि	81
8.2 पशुपालन	89
9. बिहार : वन एवं वन्यजीव अभयारण्य	94-104
10. बिहार : खनिज संसाधन	105-111
11. बिहार : औद्योगीकरण एवं नियोजन	112-118
12. बिहार : ऊर्जा संसाधन	119-121
13. बिहार : परिवहन एवं संचार	122-125
14. बिहार : जनगणना-2011	126-133

15. बिहार : राजव्यवस्था एवं प्रशासन	134–147
15.1 बिहार विधानपरिषद	134
15.2 बिहार विधानसभा	134
15.3 राज्यपाल	135
15.4 बिहार की मंत्रिपरिषद	136
15.5 उच्च न्यायालय	138
16. बिहार : पंचायती राजव्यवस्था	148–151
17. बिहार : शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद	152–158
18. बिहार : पर्यटन	159–165
18.1 राज्य में पर्यटन एवं पर्यटक स्थल का स्वरूप	159
18.2 बिहार में अवस्थित विभिन्न धर्मों के प्रमुख धार्मिक स्थल एवं महत्त्व	161
19. बिहार : कला एवं संस्कृति	166–181
20. बिहार : पुरस्कार एवं सम्मान	182–187
21. बिहार: राज्य-संचालित योजनाएँ	188–200
22. बिहार : समसामयिकी	201–209
23. बिहार : प्रसिद्ध व्यक्तित्व	210–225
24. विविध	226–232
24.1 बिहार द्वारा विशेष राज्य के दर्जे की माँग	226
24.2 बिहार मद्यनिषेध और उत्पाद अधिनियम, 2016	227
24.3 बिहार लोक सेवाओं का अधिकार अधिनियम, 2011	228
24.4 बिहार की राज्य राजनीति	228
24.5 संसद में बिहार	229

The map displays the state of Bihar, India, divided into its constituent districts. The districts are labeled as follows:

- पश्चिमी चंपारण
- गोपालगंज
- सिवान
- सारन
- बक्सर
- भोजपुर
- पटना
- अरवल
- जहानाबाद
- औरंगाबाद
- गया
- सीतामढ़ी
- मुजफ्फरपुर
- वैशाली
- समस्तीपुर
- नालन्दा
- नवादा
- मधुबनी
- दरभंगा
- बेगूसराय
- लखीसराय
- जमुई
- सुपौल
- मधेपुरा
- सहरसा
- खगड़िया
- मुंगेर
- बाँका
- अररिया
- पूर्णिया
- कटिहार
- किशनगंज
- भागलपुर

Surrounding areas are also labeled: नेपाल (North), उत्तर प्रदेश (West), पं. बंगाल (East), and झारखंड (South).

- | | |
|---------------------------------|---|
| ● राज्य का नाम | - बिहार, ऐसा माना जाता है कि इस क्षेत्र में बौद्ध मठों (विहारों) की अधिकता के कारण, इस क्षेत्र का नाम बिहार पड़ा। उल्लेखनीय है कि यह क्षेत्र प्राचीन समय में बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है। |
| ● राज्य की स्थापना (बिहार दिवस) | - 22 मार्च, 1912 |
| ● राज्य की राजधानी | - पटना (प्राचीन समय में पाटलिपुत्र, पुष्पपुर, कुसुमपुर तथा अजीमाबाद इसके अन्य नाम रहे हैं।) |
| ● राज्य की भौगोलिक स्थिति | - 24°20'10" से 27°31'15" उत्तरी अक्षांश तथा 83°19'50" से 88°17'40" पूर्वी देशांतर के मध्य |
| ● राज्य का क्षेत्रफल | - 94,163 वर्ग किमी. (देश का 13वाँ सबसे बड़ा राज्य) |
| ● उत्तर से दक्षिण की लंबाई | - 345 किमी. |
| ● पूर्व से पश्चिम की लंबाई | - 483 किमी. |
| ● राज्य की सीमा से लगे राज्य | - 3, पश्चिम बंगाल (पूर्व), उत्तर प्रदेश (पश्चिम) तथा झारखंड (दक्षिण)। |
| ● राज्य की सीमा से लगा देश | - नेपाल (उत्तर में) |

बिहार के ऐतिहासिक परिचय को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत दिये गए तथ्यों के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है-

पुरापाषाण काल (Paleolithic period)

- इस काल के प्रमुख पुरातात्विक अवशेष मुख्यतः दक्षिणी बिहार से प्राप्त हुए हैं। इसमें पत्थर की कुल्हाड़ी, चाकू, खुरचनी तथा उत्कीर्णक (खूर्पी) आदि हैं।
- ये अवशेष मुख्यतः गया की जेठियन व पेमार घाटी, मुंगेर के भीम बांध व पैसरा, भागलपुर के राजपोखर व मालीजोर, पश्चिमी चंपारण के बाल्मीकि नगर तथा नालंदा क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त गया जिले के शेरघाटी में प्रागैतिहासिक मानव के चट्टानी आवास के दो साक्ष्य भी मिले हैं।

मध्यपाषाण काल (Mesolithic period)

इस काल के साक्ष्यों के अंतर्गत मुंगेर जिले से छोटे आकार के पत्थर-निर्मित तेज हथियार तथा नोक वाले औजार मिले हैं।

नवपाषाण काल (Neolithic period)

इस काल के साक्ष्यों के अंतर्गत पत्थर के सूक्ष्म औजारों के साथ-साथ हड्डी निर्मित उपकरण प्रमुख हैं, जो चिरांद (सारण), मनेर (पटना), चेचर व कुतुबपुर (वैशाली), ताराडीह (गया) तथा सेनुआर (रोहतास) से मिले हैं। इनमें चिरांद हड्डी के उपकरणों के लिये पूरे देश में विख्यात है।

ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic period)

इस काल के साक्ष्य चिरांद (सारण), सोनपुर (बेलागंज प्रखंड, गया), मनेर (पटना), चेचर (वैशाली), राजगीर सेनुआर (रोहतास) तथा ओरियम (भागलपुर) से मिले हैं। इनमें काले एवं लाल मृद्भांड प्रमुख हैं, जो सामान्यतः 1000 ई.पू. से 900 ई.पू. तक के माने जाते हैं।

लौह काल (Iron period)

- इस काल को उत्तर वैदिक काल भी कहा जाता है। इस दौरान मानवीय बस्तियों के उत्तर बिहार क्षेत्र में स्थापित होने के संकेत मिलते हैं। इस काल के अंतर्गत लोहे का उपयोग मुख्यतः औजार बनाने के लिये होता था।
- इस काल के दूसरे चरण को सामान्यतः उत्तरी काले चमकीले मृद्भांडों से जाना जाता है, जिसके साक्ष्य बक्सर व चिरांद से मिले हैं।
- इस काल में कृषि कार्यों में लोहे का प्रयोग शुरू होने लगा था, साथ ही नगरीकरण की शुरुआत भी हो गई थी।

वैदिक युग (Vedic period)

- इस काल के अंतर्गत सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में वर्तमान बिहार के भौगोलिक क्षेत्र का वर्णन मिलता है। इसमें विदेह (वर्तमान तिरहुत क्षेत्र) के 'जनक' को सम्राट (राजा) बताया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें विदेह माधव तथा उनके पुरोहित गौतम राहूगण एवं सदानीरा के रूप में वर्तमान गंडक नदी की भी चर्चा है।
- शतपथ ब्राह्मण के अनुसार माधव विदेह को ही बिहार (उत्तर बिहार) में आर्य संस्कृति का विस्तारकर्ता माना जाता है।
- विदेह के राजा 'जनक' के दरबार में ही शतपथ ब्राह्मण के रचयिता याज्ञवल्क्य तथा उनकी पत्नी मैत्रयी रहते थे।

- हरि सिंह देव इस वंश का अंतिम शासक था। इसके ही शासनकाल में गयासुद्दीन तुगलक का बंगाल अभियान हुआ था।
- इस वंश का 1378 ई. में पूर्ण रूप से पतन हो गया।

जैन धर्म व महावीर	बौद्ध धर्म
<ul style="list-style-type: none"> ● इस धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर का जन्म 540 ई.पू. में कुंडग्राम (वैशाली) में हुआ था। ● इनके पिता का नाम सिद्धार्थ, जबकि माता का नाम त्रिशला था। ● 42 वर्ष की आयु में ऋजुपालिका नदी के तट पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। ● 72 वर्ष की उम्र में राजगृह के समीप (पावापुरी) 468 ई.पू. में इन्हें निर्वाण प्राप्ति हुई। 	<ul style="list-style-type: none"> ● बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्म लुंबिनी में हुआ था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। ● इनकी पत्नी का नाम यशोधरा जबकि पुत्र का नाम राहुल था। ● इनको 35 वर्ष की आयु में बोधगया में निरंजना नदी (फल्गु) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस घटना को संबोधी कहा जाता है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- तृतीय बौद्ध सभा पाटलिपुत्र में बुलाई गई थी।
- विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में लिच्छवी के द्वारा स्थापित किया गया था।
- बोधगया में लगा हुआ बोधिवृक्ष अपनी पीढ़ी का चौथा वृक्ष है।
- उद्यन को पाटलिपुत्र का संस्थापक माना जाता है।
- नंद वंश के पश्चात् मगध पर मौर्य वंश का शासन स्थापित हुआ।
- घनानंद सिकंदर महान का समकालीन था।
- पाटलिपुत्र स्थित चंद्रगुप्त का राजमहल लकड़ी का बना हुआ था।
- बराबर की गुफाओं का उपयोग आजीवक संप्रदाय के लोगों ने अपने आश्रयगृह के रूप में किया था।
- भाब्रु अभिलेख में अशोक को मगध का सम्राट बताया गया है।
- अजातशत्रु के समय में प्रथम बौद्ध संगीति राजगृह में आयोजित हुई थी।

नोट: बिहार के प्राचीन इतिहास से संबंधित तथ्यों के विस्तृत अध्ययन के लिये बिहार डी.एल.पी. के प्राचीन भारत (बिहार के विशेष संदर्भ सहित) बुकलेट को देखें।

बहुविकल्पीय प्रश्न

- कर्नाट वंश का संस्थापक कौन था?
60-62वीं, B.P.S.C. (Pre)
 - (a) नान्य देव
 - (b) नर सिंह देव
 - (c) विजय देव
 - (d) हरि देव
 - (e) उपरोक्त में से कोई नहीं/उपरोक्त में से एक से अधिक
- कर्नाट वंश का अंतिम शासक कौन था?
 - (a) हरि सिंह
 - (b) राम सिंह
 - (c) मति सिंह
 - (d) श्याम सिंह
 - (e) उपरोक्त में से कोई नहीं/उपरोक्त में से एक से अधिक
- नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक कौन थे?
56-59वीं, B.P.S.C. (Pre)
 - (a) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य
 - (b) कुमारगुप्त
 - (c) धर्मपाल
 - (d) पुष्यगुप्त
- महावीर स्वामी का जन्म कहाँ हुआ था?
53, 55, 47, 42वीं, B.P.S.C. (Pre)
 - (a) कुंडग्राम
 - (b) पाटलिपुत्र
 - (c) वैशाली
 - (d) मगध

5. मगध की प्रारंभिक राजधानी कौन-सी थी?
53, 55, 47वीं, B.P.S.C. (Pre)
(a) पाटलिपुत्र (b) वैशाली
(c) राजगृह (गिरिब्रज) (d) चंपा
6. अजातशत्रु के वंश का नाम क्या था?
53-55वीं, B.P.S.C. (Pre)
(a) मौर्य (b) हर्यक
(c) नंद (d) गुप्त
7. तृतीय बौद्ध सभा किस स्थान पर बुलाई गई थी?
53-55वीं, B.P.S.C. (Pre)
(a) तक्षशिला (b) सासाय
(c) बोधगया (d) पाटलिपुत्र
8. बोधगया में "बोधि वृक्ष" अपने वंश की किस पीढ़ी का है?
48-52वीं, B.P.S.C. (Pre)
(a) तृतीय (b) चतुर्थ
(c) पंचम (d) षष्ठम
9. विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में किसके द्वारा स्थापित किया गया?
48-52वीं, B.P.S.C. (Pre)
(a) मौर्य (b) नंद
(c) गुप्त (d) लिच्छवी
10. पाटलिपुत्र के संस्थापक हैं?
48, 52, 44वीं, B.P.S.C. (Pre)
(a) उदयन (b) अशोक
(c) बिंबिसार (d) महापद्म नंद
11. नंद वंश के पश्चात् मगध पर किस राजवंश ने शासन किया?
(a) मौर्य (b) शुंग
(c) गुप्त (d) चंपा
12. ईसा पूर्व छठी सदी में विश्व की प्रथम गणतंत्रात्मक व्यवस्था कहाँ स्थापित थी? **46वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) वैशाली (b) एथेंस
(c) स्पार्टा (d) पाटलिपुत्र
13. चीनी यात्री ह्वेनसांग ने किस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था? **46वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) तक्षशिला (b) विक्रमशिला
(c) मगध (d) नालंदा
14. वह स्रोत जिसमें पाटलिपुत्र के प्रशासन का वर्णन उपलब्ध है, वह है-
(a) दिव्यावदान (b) अर्थशास्त्र
(c) इंडिका (d) अशोक के शिलालेख
15. अशोक के शासनकाल में बौद्ध सभा किस नगर में आयोजित की गई थी- **45वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) मगध (b) पाटलिपुत्र
(c) समस्तीपुर (d) राजगृह
16. निम्नलिखित में से मगध का कौन-सा राजा सिकंदर महान के समकालीन था? **44वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) महापद्मनंद (b) घनानंद
(c) सुकल्प (d) चंद्रगुप्त मौर्य
17. विक्रमशिला शिक्षा केंद्र के संस्थापक का नाम है- **43वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) देवपाल (b) धर्मपाल
(c) नयन पाल (d) नरेंद्र पाल
18. पाटलिपुत्र में स्थित चंद्रगुप्त का महल मुख्यतः बना था- **41वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) ईंटों का (b) पत्थर का
(c) लकड़ी का (d) मिट्टी का
19. बराबर की गुफाओं का उपयोग किसने आश्रयगृह के रूप में किया? **40वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) आजीविकों ने (b) थारुओं ने
(c) जैनों ने (d) तांत्रिकों ने
20. वह स्तंभ जिसमें अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट बताया है- **39वीं, B.P.S.C. (Pre)**
(a) मस्की का लघु स्तंभ (b) रूमिनदेयी स्तंभ
(c) कीन स्तंभ (d) भाब्रु स्तंभ
21. गौतम बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था?
(a) कुंडग्राम में (b) पाटलिपुत्र में
(c) लुंबिनी में (d) वैशाली में
22. अजातशत्रु के शासनकाल में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किस नगर में किया गया था?
(a) राजगृह (b) मगध
(c) पाटलिपुत्र (d) कश्मीर

उत्तरमाला

- | | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (a) | 3. (b) | 4. (a) | 5. (c) | 6. (b) | 7. (d) | 8. (b) | 9. (d) | 10. (a) |
| 11. (a) | 12. (a) | 13. (d) | 14. (c) | 15. (b) | 16. (b) | 17. (b) | 18. (c) | 19. (a) | 20. (d) |
| 21. (c) | 22. (a) | | | | | | | | |

बिहार के मध्यकालीन इतिहास के अंतर्गत हम लगभग 12वीं सदी के मध्य से लेकर 17वीं सदी के मध्य तक की घटनाओं को शामिल करते हैं। इसका आरंभ बिहार में तुर्कों के आगमन से होता है, जबकि अंत यूरोपियन के आगमन से।

सल्तनतकाल में बिहार (Bihar in sultanate period)

- बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता **बख्तियार खिलजी** को माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि उसने 12वीं सदी के अंत तथा 13वीं सदी के प्रारंभ के मध्य बिहार पर आक्रमण किया था।
- इतिहासकारों के अनुसार बख्तियार खिलजी ने ओदंतपुरी तथा नालंदा विश्वविद्यालय का विनाश किया। बख्तियार खिलजी के समय बिहार शरीफ तुर्क शासन का प्रमुख केंद्र था।
- **बख्तियारपुर शहर का संस्थापक बख्तियार खिलजी** को ही माना जाता है। इसने स्वयं द्वारा विजित तत्कालीन प्रदेशों की राजधानी लखनौती (लक्ष्मणवटी) को बनाया था।
- बख्तियार खिलजी ने मिथिला क्षेत्र के कर्नाट वंशीय शासक नरसिंहदेव तथा जयनगर के गुप्त शासकों को भी अपनी अधीनता स्वीकार कराई।
- बख्तियार खिलजी की हत्या उसके ही अधिकारी अलीमर्दान खिलजी ने कर दी।
- 1225 ई. में इल्तुतमिश ने बिहारशरीफ तथा बाढ़ पर अधिकार किया। इस दौरान उसने राजमहल की पहाड़ियों में हिसामुद्दीन इवाज को हराया।
- 'मलिक अलाउद्दीन जानी' को इल्तुतमिश ने बिहार में अपना प्रथम सूबेदार नियुक्त किया था।
- 1229-30 ई. में बिहार तथा बंगाल को पुनः विभाजित कर दिया। उल्लेखनीय है कि मलिक जानी के बाद इल्तुतमिश के पुत्र नसीरुद्दीन महमूद ने अवध, बिहार तथा लखनौती (बंगाल) को एक कर दिया था।
- सैफुद्दीन एबक एवं तुगान खाँ भी इल्तुतमिश के द्वारा ही बिहार के सूबेदार बने।
- गया प्रशस्ति (गया के वनराज नामक राजा की प्रशस्ति) के अनुसार गया, बलबन के राज्य में शामिल था।
- 1297 ई. में दरभंगा के राजा सक्र सिंह ने अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति शेख मोहम्मद इस्माइल को पराजित कर दिया। हालाँकि इस्माइल के दूसरे आक्रमण में हार के बाद **सक्र सिंह** ने अलाउद्दीन खिलजी से समझौता कर लिया।
- गियासुद्दीन तुगलक ने 1324 में बंगाल अभियान से वापसी के दौरान कर्नाट वंश के अंतिम शासक हरि सिंह देव को हराया।
- मोहम्मद बिन तुगलक के समय बिहार का सूबेदार/प्रांतपति मज्दुल मुल्क था।
- ऐसा माना जाता है कि फिरोजशाह तुगलक ने राजगृह (राजगीर) के जैन मंदिरों को दान दिया था।
- तुगलक काल में बिहार की राजधानी बिहारशरीफ थी। इस समय का प्रमुख प्रशासक मलिक इब्राहिम (मलिक बंया) को माना जाता है। जिसका मकबरा बिहारशरीफ में स्थित है।
- 1394 ई. में ख्वाजाजहाँ बिहार का सूबेदार नियुक्त (सुल्तान नसिरुद्दीन महमूद द्वारा) हुआ।

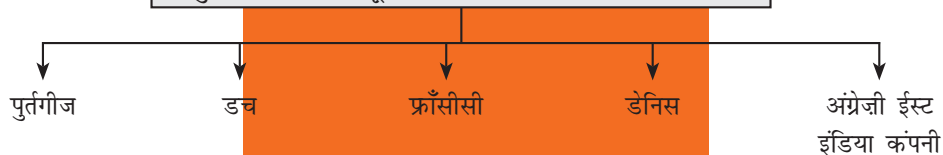
शेरशाह (Shershah)

- यह तत्कालीन सहसराम (सासाराम) के जागीरदार हसन खाँ सूर का पुत्र था।
- 1536 ई. में शेरशाह ने सूरजगढ़ के युद्ध में बंगाल की सेना को हराया।
- 26 जून, 1539 को इसने चौसा (बक्सर) के युद्ध में मुगल शासक हुमायूँ को हराया।
- 'तारीखे दाउदी' जिसकी रचना अब्दुल्लाह ने की है, के अनुसार शेरशाह ने पटना को राजधानी बनाने के साथ ही यहाँ दुर्ग का भी निर्माण करवाया।

बिहार : आधुनिक इतिहास (Bihar : Modern History)

बीती हुई घटनाओं का लिखित एवं प्रामाणिक विवरण ही इतिहास कहलाता है। बिहार में आधुनिक इतिहास का कालक्रम सामान्यतः यूरोपीय व्यापारियों के आगमन से माना जाता है। चूँकि यूरोपीय व्यापारियों ने भारत आगमन के क्रम में बिहार का भी चक्कर लगाया तथा बिहार के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार को सफल बनाया। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए विभिन्न यूरोपीय राष्ट्रों ने बिहार में अनेक फैक्ट्रियाँ स्थापित की। अंततोगत्वा बिहार की राजनीति में हस्तक्षेप कर शासन संचालन हेतु सर्वेसर्वा बने, तत्पश्चात् बिहार के लोगों में भी राष्ट्रवादी भावना उजागर हुई तथा स्वतंत्र राज्य की माँग उठने लगी, जिसका आगे चलकर स्वतंत्र बिहार राज्य के रूप में गठन हुआ।

आधुनिक बिहार में यूरोपीय व्यापारियों के आगमन का क्रम



- **बिहार में पुर्तगाली व्यापारियों का आगमन:** सर्वप्रथम बिहार में पुर्तगाली व्यापारी आए जो बंगाल के हुगली में स्थापित व्यापारिक केंद्र से नाव के माध्यम से पटना आया-जाया करते थे। पुर्तगालियों द्वारा निर्यातित वस्तुओं में मुख्यतः चीनी मिट्टी के बर्तन तथा विभिन्न प्रकार के मसाले थे जबकि आयातित वस्तुओं में मुख्य रूप से सूती वस्त्र एवं अन्य प्रकार के वस्त्र होते थे।
- **बिहार में डच व्यापारियों का आगमन:** डचों ने सर्वप्रथम 1632 ई. में वर्तमान पटना कॉलेज के उत्तरी भाग में स्थित इमारत में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना की थी। डचों का अधिकांश रुझान शोरे के व्यापार की तरफ था। इसके अलावा चीनी, अफीम एवं सूती वस्त्र के व्यापार में भी इनकी काफी अभिरुचि रही है।
- सम्मिलित रूप से बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा में व्यापार करने हेतु डच प्रधान नाथियस वैगडेंन बरूक ने मुगल सम्राट औरंगजेब से 1662 ई. में एक फरमान प्राप्त किया।
- **बिहार में फ्राँसीसी व्यापारियों का आगमन:** बिहार में फ्राँसीसी कंपनी का अस्तित्व पटना में 1734 ई. में माल गोदाम की स्थापना से मानी जाती है। इनका मुख्य उद्देश्य बिहार से शोरा प्राप्त करके अपने व्यापार को उन्नत स्वरूप में स्थापित करना था।
- फ्राँसीसी कंपनी के प्रमुख एम. जीयाला बंगाल छोड़कर 2 मई, 1757 ई. को बिहार के भागलपुर तथा 3 जून, 1757 ई. को पटना पहुँचा।
- **बिहार में डेनिश व्यापारियों का आगमन:** सर्वप्रथम बिहार के पटना में डेनिश फैक्ट्री की स्थापना 1774-75 ई. में हुई। ये मुख्यतः शोरे का व्यापार करते थे, बाद में ब्रिटिश कंपनी से मतभेद होने के पश्चात् इनके व्यापारिक फैक्ट्री एवं स्थल जब्त हो गए।
- **बिहार में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन:** पहली बार पटना में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रमुख के रूप में 1664 ई. में जॉब चारनॉक को नियुक्त किया गया जो 1680-81 तक इस पद पर रहा। 1691 ई. में पटना के गुलजार बाग में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का स्थायी माल गोदाम स्थापित हुआ। प्लासी की लड़ाई (23 जून, 1757 ई.) एवं बक्सर के युद्ध (22 अक्टूबर, 1764 ई.) में अंग्रेजों के विजित होने के पश्चात् बिहार पूर्ण रूप से अंग्रेजी शासन के अधीन हो गया, जिसकी पुष्टि इलाहाबाद की संधि (12 अगस्त, 1765 ई.) से हुई। इस संधि के तहत अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को सम्मिलित रूप से बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई। इस संधि में मुख्य रूप से पराजित पक्ष का नेतृत्व मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय ने किया जबकि विजित पक्ष का नेतृत्व ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रधान रॉबर्ट क्लाइव ने किया।

बिहार : भौगोलिक स्थिति व उच्चावच (Bihar : Geographical Location and Relief)

किसी भी राज्य के भौगोलिक परिदृश्य के बारे में जानने के लिये उसकी भौगोलिक स्थिति व उच्चावच जानना आवश्यक होता है। इस संदर्भ में बिहार की भौगोलिक स्थिति व उच्चावच में काफी विविधताएँ पाई जाती हैं। इनमें पर्वत, पठार, मैदान और अन्य भौगोलिक उच्चावच मिलकर बिहार की भौगोलिक संरचना को एक विशेष रूप प्रदान करते हैं।

5.1 बिहार की भौगोलिक स्थिति (Geographical Location of Bihar)

- बिहार भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक भू-आवेष्टित राज्य है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखंड, पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित हैं।
- बिहार राज्य का भौगोलिक विस्तार $24^{\circ}20'10''$ उत्तरी अक्षांश से $27^{\circ}31'15''$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{\circ}19'50''$ पूर्वी देशांतर से $88^{\circ}17'40''$ पूर्वी देशांतर के मध्य है।
- इसका संपूर्ण क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी. है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रफल 92,257.51 वर्ग किमी. तथा शहरी क्षेत्रफल 1,095.49 वर्ग किमी. है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.86% है।
- बिहार की उत्तर से दक्षिण तक अधिकतम लंबाई 345 किमी. तथा पूरब से पश्चिम तक अधिकतम चौड़ाई 483 किमी. है।
- समुद्र तट से बिहार की दूरी लगभग 200 किमी. है। समुद्र तल से इस राज्य की ऊँचाई 173 फीट है तथा यह गंगा-हुगली नदी मार्ग द्वारा समुद्र से जुड़ा है।

भूगर्भिक संरचना (Geological structure)

बिहार की भूगर्भिक संरचना के अध्ययन हेतु विभिन्न युग में निर्मित चट्टानों का प्रयोग किया जाता है।

बिहार में पाई जाने वाली चट्टानों को 4 प्रमुख संरचनात्मक समूहों में रखा जाता है—

- | | |
|-------------------------------|--------------------------|
| (i) धारवाड़ चट्टानें | (iii) टर्शियरी चट्टानें |
| (ii) विंध्यन समूह की चट्टानें | (iv) क्वाटर्नरी चट्टानें |

धारवाड़ चट्टानें

- प्री-कैम्ब्रियन युग में निर्मित ये चट्टानें बिहार के दक्षिण-पूर्वी भाग, मुंगेर में स्थित खड़गपुर की पहाड़ी, जमुई, नवादा, राजगीर आदि स्थानों पर पाई जाती हैं।
- स्लेट, क्वार्ट्जाइट आदि धारवाड़ समूह की चट्टानें हैं।

विंध्यन समूह की चट्टानें

- इस समूह की चट्टानें सोन नदी के उत्तर में स्थित रोहतास तथा कैमूर जिले में पाई जाती हैं। इन चट्टानों से सीमेंट उद्योग के लिये चूना-पत्थर तथा गंधक निर्माण के लिये पायराइट मिलता है।
- बालू-पत्थर, क्वार्ट्जाइट, डोलोमाइट, चूना पत्थर आदि इस समूह की चट्टानें हैं।
- इस समूह की चट्टानों का प्रयोग सासाराम, आगरा, दिल्ली तथा जयपुर में निर्मित ऐतिहासिक स्मारकों तथा सारनाथ, साँची के बौद्ध स्तूपों में किया गया है।

टर्शियरी चट्टानें

टर्शियरी युग की चट्टानें पश्चिमी चंपारण के उत्तर-पश्चिमी भाग-रामनगर दून तथा सोमेश्वर श्रेणी में पाई जाती हैं।

किसी भी स्थान के वातावरण की दीर्घकालिक स्थिति को जलवायु के माध्यम से समझा जाता है। बिहार की जलवायु में भी अन्य राज्यों की तरह क्षेत्रीय विविधता दिखाई देती है। एक ही समय में बिहार के कुछ क्षेत्र जलप्लावित रहते हैं जबकि दूसरी तरफ सूखा का प्रकोप रहता है। इस प्रकार की विविधता जलवायु द्वारा निर्धारित होती है, जिसका स्पष्ट प्रभाव यहाँ की मृदा पर भी पड़ता है।

6.1 जलवायु (Climate)

- बिहार में मानसूनी प्रकार की जलवायु पाई जाती है। अपने अक्षांशीय विस्तार के आधार पर यह उपोष्ण जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
- यहाँ की जलवायु में महाद्वीपीय लक्षण पाए जाते हैं।
- इसके पूर्वी भाग में आर्द्र तथा पश्चिमी भाग में अर्द्धशुष्क जलवायु मिलती है।
- कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के आधार पर बिहार का उत्तरी भाग Cwg तथा दक्षिणी भाग Aw जलवायु के अंतर्गत आता है।
- बिहार की जलवायु को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं—

हिमालय की अवस्थिति, कर्क रेखा से दूरी, बंगाल की खाड़ी से इसकी निकटता, ग्रीष्मकालीन तूफान तथा दक्षिण-पश्चिम मानसून की क्रियाशीलता।

बिहार में मुख्य रूप से तीन ऋतुएँ पाई जाती हैं—

ग्रीष्म ऋतु (मार्च से जून के मध्य तक) [Summer season (March to mid June)]

- सूर्य के उत्तरायण होने के कारण इस समय तापमान में बढ़ोतरी होती जाती है। यहाँ मई का महीना सर्वाधिक गर्म होता है।
- ग्रीष्म ऋतु में बंगाल की खाड़ी में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के कारण बिहार के पूर्वी हिस्से में बारिश होती है। इस वर्षा को 'नार्वेस्टर' कहा जाता है।
- बिहार का सबसे गर्म स्थान गया ज़िले में है।

वर्षा ऋतु (मध्य जून से मध्य अक्टूबर तक) [Rainy season (Mid June to mid October)]

- बिहार में मानसून का आगमन मध्य जून से होता है। यहाँ जुलाई एवं अगस्त में अत्यधिक वर्षा होती है।
- बिहार में वर्षा मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण होती है। यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा 125 से.मी. है।
- यहाँ सर्वाधिक वर्षा किशनगंज ज़िले में, जबकि सबसे कम वर्षा पटना के पश्चिम में स्थित त्रिकोणीय भूखंड पर होती है।
- इस राज्य में मानसून प्रत्यावर्तन का काल मध्य अक्टूबर से नवंबर तक होता है।

शीत ऋतु (नवंबर से फरवरी तक) [Winter season (November to February)]

- इस ऋतु में भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले चक्रवातीय तूफानों से झंझावातीय वर्षा होती है।
- यह वर्षा रबी की फसल के लिये लाभदायक मानी जाती है।
- बिहार में शीत ऋतु का सर्वाधिक ठंडा महीना जनवरी का होता है। इस समय औसत न्यूनतम तापमान 7.5° सेंटीग्रेड के आस-पास रहता है।

बिहार : अपवाह तंत्र एवं सिंचाई (Bihar : Drainage System and Irrigation)

बिहार में विद्यमान अपवाह तंत्र के अंतर्गत मुख्यतः नदियों, झीलों, आर्द्रभूमि, जलप्रपात तथा विभिन्न गर्म जलकुंडों को शामिल किया जाता है। इस अपवाह तंत्र के अंतर्गत विभिन्न नदियों से निकाली गई नहरों तथा नलकूपों, तालाबों एवं कुओं के माध्यम से संपूर्ण प्रदेश में सिंचाई की जाती है।

7.1 नदियाँ (Rivers)

बिहार में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ निम्नलिखित हैं—

गंगा

- मूल रूप से यह नदी भागीरथी के नाम से गंगोत्री हिमनद (उत्तराखंड) से निकलती है। देवप्रयाग (उत्तराखंड) में भागीरथी व अलकनंदा के संगम के बाद इसे गंगा के नाम से जाना जाता है।
- बिहार में इस नदी की लंबाई लगभग 445 किलोमीटर है, हालाँकि, भारत में इसकी कुल लंबाई लगभग 2525 किलोमीटर है।
- बिहार में यह नदी (पश्चिम से पूर्व के क्रम में) मुख्यतः बक्सर, भोजपुर, सारण, पटना, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, मुंगेर, भागलपुर तथा कटिहार जिलों से प्रवाहित होती है।
- यह नदी चौसा (बक्सर) के पास बिहार में प्रवेश करती है तथा कटिहार (बिहार) एवं साहेबगंज (झारखंड) के बीच सीमा बनाते हुए पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर जाती है।
- बिहार में इसमें बायीं ओर (उत्तर दिशा) से मिलने वाली नदियों में घाघरा, गंडक, बागमती, बलान, बूढ़ी गंडक, कोसी, कमला तथा महानंदा प्रमुख हैं।
- इसमें दायीं ओर (दक्षिण दिशा) से मिलने वाली नदियों में सोन, कर्मनाशा, पुनपुन तथा किऊल प्रमुख हैं।

घाघरा (सरयू) नदी

- इस नदी का उद्गम तिब्बत के पठार पर मानसरोवर झील के पास स्थित मापचोचुंग हिमनद (ग्लेशियर) से होता है।
- बिहार में इस नदी की लम्बाई मात्र 83 किलोमीटर है। यह दरौली (सीवान जिला) के नजदीक बिहार में प्रवेश करती है तथा रिविलगंज (सारण जिला) के पास गंगा में मिल जाती है।
- इस नदी को सरयू तथा करनाली के नाम से भी जाना जाता है।

सोन

- यह गंगा में दाहिनी ओर (दक्षिण दिशा) से मिलने वाली प्रमुख नदी है। इस नदी का उद्गम अमरकण्टक (मध्य प्रदेश) से होता है।
- यह रोहतास जिले से बिहार में प्रवेश करती है तथा पटना के समीप गंगा नदी में मिल जाती है।
- इसकी बिहार में लम्बाई जहाँ कुल 202 किलोमीटर है, वहीं इसकी सम्पूर्ण लम्बाई 784 किलोमीटर है।
- गोपद, कन्हर, उत्तरी कोयल तथा रिहन्द इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
- इस नदी पर दक्षिण-पश्चिम बिहार की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना निर्मित है।

कोसी

- यह नदी अपना मार्ग बदलने के लिये कुख्यात है। इस नदी में प्रतिवर्ष आने वाली भीषण बाढ़ के कारण इसे 'बिहार का शोक' कहा जाता है।
- यह नदी सुपौल, सहरसा, मधेपुरा तथा पूर्णिया जिलों से प्रवाहित होने के बाद गंगा नदी में मिल जाती है।

कृषि व पशुपालन बिहार में आजीविका का प्रमुख साधन है। इस कार्य में लगभग बिहार की 85% कार्यशील जनसंख्या लगी हुई है। यहाँ खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत मुख्यतः धान, गेहूँ, मक्का, जौ, ज्वार, रागी, बाजरा, सरसों, अरहर, चना, मसूर तथा नकदी या व्यावसायिक फसलों के अंतर्गत गन्ना, मेस्ता, मखाना, मिर्च, चाय, जूट तथा तंबाकू की कृषि की जाती है। पशुपालन के अंतर्गत मुख्यतः गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर, मुर्गीपालन तथा मत्स्यपालन का कार्य किया जाता है।

8.1 कृषि (Agriculture)

- बिहार एक कृषि-प्रधान राज्य है, यहाँ की लगभग 85% जनसंख्या कृषि पर आश्रित है।
- यहाँ कृषि योग्य भूमि 80% से अधिक है। यहाँ का मुख्य भोजन चावल है। यही कारण है कि यहाँ के सभी जिलों में धान की खेती की जाती है।

बिहार की कृषि संरचना (Agricultural structure of Bihar)

- बिहार में गंगा के उत्तरी मैदान में कृषि की सघनता अधिक है। इस क्षेत्र के लगभग 65-80% भू-भाग पर कृषि की जाती है।
- उत्तरी बिहार में कृषि प्रणाली काफी उन्नत किस्म की है, यही कारण है कि इस क्षेत्र में अवस्थित गंडक एवं कोसी के मैदानी भागों में वर्ष में चार प्रकार की फसलें उपजाई जाती हैं।

खरीफ फसल

- खरीफ की फसल जून-जुलाई में बोई जाती है तथा नवंबर-दिसंबर में काट ली जाती है।
- खरीफ की फसल के अंतर्गत धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर आदि प्रमुख फसलें हैं।
- यह फसल राज्य के अधिकांश भागों में उपजाई जाती है।

बिहार में खरीफ की फसलों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—

भदई फसल

- इसके अंतर्गत कम समय में तैयार होने वाली फसलों की खेती की जाती है।
- भदई फसल के अंतर्गत ज्वार, बाजरा, धान, मक्का तथा कुछ तिलहनों की खेती की जाती है।

अगहनी फसल

- अगहनी फसलें वर्षा ऋतु में बोई जाती हैं तथा नवंबर-दिसंबर के महीने में काट ली जाती हैं।
- अगहनी फसल के अंतर्गत धान की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। इसके प्रमुख क्षेत्र हैं— दरभंगा, मधुबनी, पूर्णिया, सहरसा, सीतामढ़ी, रोहतास आदि।

रबी फसल

- रबी की फसल की बुआई अक्टूबर-नवंबर में की जाती है तथा मार्च-अप्रैल के महीने में तैयार हो जाती है।
- रबी की फसल के अंतर्गत गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों आदि की खेती की जाती है, जबकि गेहूँ सर्वप्रथम फसल है।
- रबी की फसल हेतु सिंचाई की आवश्यकता होती है इसलिये जिस क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा पर्याप्त रूप में विद्यमान है, वहाँ इसकी उपज ज्यादा है।

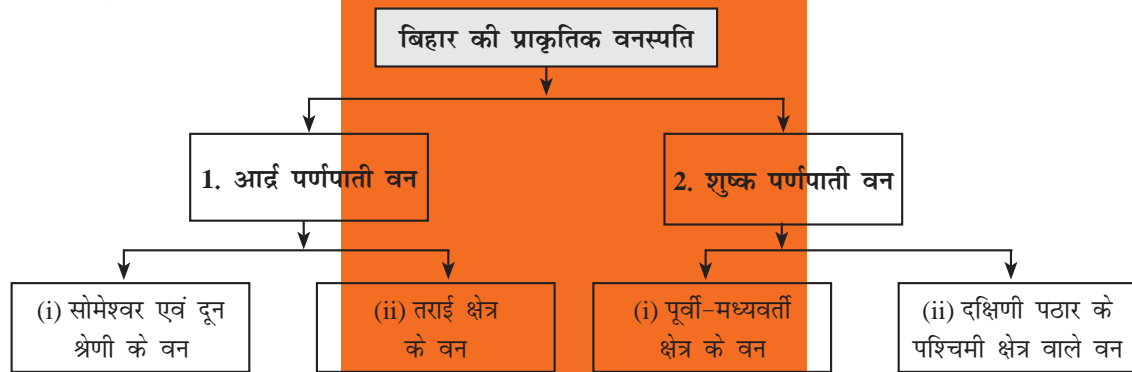
बिहार : वन एवं वन्यजीव अभयारण्य (Bihar: Forest and Wildlife Sanctuary)

सामान्य अवधारणाओं के अनुसार, धरातल पर पाए जाने वाले पेड़, पौधे, घास, झाड़ियाँ एवं लताओं के समूह को वन कहा जाता है। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ की जलवायु मानसूनी है। सघन जनसंख्या एवं कृषि भूमि की अधिकाधिक मांग होने के कारण यहाँ वन क्षेत्र का विस्तार कम हो पाया है। दूसरी बात यह भी है कि बिहार में वन निर्धारण के प्रमुख कारकों में से वर्षा की मात्रा का अहम योगदान रहता है जबकि इस मामले में बिहार को अक्सर मानसून के साथ जुआ खेलना पड़ता है। बिहार में जहाँ एक ओर भीषण बाढ़ के कारण होने वाले कटाव वनों के विकास को प्रभावित करते हैं वहीं दूसरी ओर शिवालिक श्रेणी एवं कैमूर के पहाड़ी क्षेत्रों की ऊँचाई भी वनस्पतियों की सघनता एवं विकास को प्रभावित करती हैं।

बिहार में वन क्षेत्र का वितरण (*Distribution of forest area in Bihar*)

वर्तमान में बिहार राज्य में लगभग 6845 वर्ग किमी. के क्षेत्र में प्राकृतिक वन क्षेत्र अधिसूचित हैं जो कि राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का 7.27% है। ये प्राकृतिक वन पश्चिम चंपारण, कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, जहानाबाद, नवादा, नालंदा, मुंगेर, बाँका और जमुई जिलों में फैले हुए हैं। पश्चिम चंपारण को छोड़कर उत्तर बिहार प्राकृतिक वनों से रहित है। शिवालिक के तराई क्षेत्र में पश्चिम चंपारण जिले में प्राकृतिक साल के वन मिलते हैं। इसके अलावा दक्षिण बिहार में कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, जमुई, मुंगेर और बाँका जिले में साल के वन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

बिहार की प्राकृतिक वनस्पति में पर्णपाती किस्म के वनों की बहुलता है। वर्षा वितरण की असमानता के कारण यहाँ आर्द्र एवं शुष्क दोनों प्रकार के वन पाए जाते हैं। बिहार में वनों का वर्गीकरण हम निम्नलिखित तरीके से कर सकते हैं—



1. आर्द्र पर्णपाती वन (*Moist deciduous forest*)

सामान्यतः इस प्रकार के वन वैसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा की मात्रा 120 सेमी. से अधिक हो। आर्द्र पर्णपाती वन के अंतर्गत सोमेश्वर एवं दून श्रेणी के वन तथा तराई क्षेत्र के वन आते हैं। सोमेश्वर एवं दून श्रेणी के वनों का विस्तार मुख्यतः पश्चिमी चंपारण में है। इस क्षेत्र में 160 सेमी. से भी अधिक वर्षा होती है। यहाँ की उच्च भूमियों एवं पहाड़ी ढालों पर पाए जाने वाले वनों में साल, सेमल, खैर, शीशम इत्यादि वृक्षों की प्रधानता है। सोमेश्वर एवं दून श्रेणियों में ऊँचाई के कारण सवाना प्रकार की वनस्पतियाँ भी देखने को मिलती हैं।

तराई क्षेत्र के वन भारत-नेपाल सीमा से सटे क्षेत्रों में पाए जाते हैं। तराई क्षेत्र का उत्तरी-पश्चिमी तथा उत्तरी पूर्वी भाग इस प्रकार के वनों से आच्छादित है। निम्न दलदली भूमि में पाई जाने वाली वनस्पतियाँ यहाँ अधिकांश रूप से पाई जाती हैं जैसे- घास, हाथी घास, नरकट, झाड़, सबई, बाँस इत्यादि। इस प्रकार के वन पूर्णिया, किशनगंज, अररिया एवं सहरसा जिलों में संकीर्ण पट्टी के रूप में पाए जाते हैं, जबकि सहरसा तथा पूर्णिया के उत्तर सीमांत क्षेत्रों में साल वृक्षों के वनों की पट्टियाँ मिलती हैं। शिवालिक के तराई क्षेत्र में पश्चिमी चंपारण जिले में प्राकृतिक साल के वनों की प्रधानता है।

सामान्यतः खनिज से तात्पर्य ऐसे भौतिक पदार्थ से होता है जिसे 'खान' से खोदकर निकाला जाता है। अगर हम खनिज शब्द का संधि-विच्छेद करते हैं तो खनि + ज अर्थात् संस्कृत शब्द 'खनि' का अर्थ होता है— 'खोदना' या 'खुदा हुआ' या 'खान' एवं 'ज' का अर्थ होता है उत्पन्न होने वाला या जन्म लेने वाला। इस तरह संयुक्त रूप से खनिज शब्द का अर्थ 'खान से उत्पन्न' होता है। अंग्रेजी में खनिज को मिनरल (Mineral) कहा जाता है। खनिज को दूसरे तरह से भी परिभाषित किया जा सकता है। यह माना जाता है कि खनिज का गुण रखने वाले पदार्थ कठोर व क्रिस्टलीय होते हैं और इस तरह हम यह कह सकते हैं कि 'खनिज वह पदार्थ है जो क्रिस्टलीय हो और दीर्घकालिक भौगोलिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप निर्मित हुआ हो।

किसी भी राज्य या प्रदेश के विकास क्रम में खनिज संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक समय था जब बिहार खनिज संसाधन के उत्पादन और भंडारण के लिहाज से अग्रणी राज्यों में शामिल था लेकिन वर्ष 2000 में विभाजन के बाद खनिज संसाधनों का अधिकांश हिस्सा झारखंड में चला गया। परंतु वर्तमान में भी बिहार में कई प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिज पाए जाते हैं। बिहार का दक्षिण-पश्चिम भाग खनिज भंडार के मामले में शेष भाग से आगे है। भौगोलिक परिस्थिति के कारण बिहार के दक्षिण-पश्चिमी जिलों में अनेक प्रकार की खनिज संपदाओं का भंडार पाया जाता है।

बिहार में विभाजन से पूर्व कोयला, बॉक्साइट, अभ्रक, तांबा, लौह अयस्क, ग्रेफाइट इत्यादि का प्रचुर भंडार था लेकिन ये क्षेत्र झारखंड में चले जाने के कारण इन खनिजों का सीमित स्रोत रह गया है। वहीं दूसरी ओर वर्तमान बिहार में चीनी मिट्टी, पायराइट, चूना पत्थर, क्वार्ट्ज, फेल्सपार, स्लेट, सोना, शोरा तथा सजावटी ग्रेनाइट इत्यादि खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। पायराइट के मामले में भारत में बिहार ही एक ऐसा राज्य है जहाँ पायराइट का उचित भंडार मिलता है। धात्विक खनिज के रूप में बिहार में बॉक्साइट और सोने का अच्छा भंडार है। खड़गपुर की पहाड़ियाँ बॉक्साइट के स्रोत हैं एवं जमुई जिले का सोनो क्षेत्र का करमटिया स्थान सोने का बड़ा भंडार रखता है। अधात्विक खनिज के रूप में बिहार के रोहतास जिले में चूना पत्थर और पायराइट; जमुई जिले में अभ्रक; भागलपुर, बाँका में चीनी मिट्टी; जमुई, गया और नवादा में क्वार्ट्ज; बेगूसराय, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण एवं सारण में शोरा तथा मुंगेर में स्लेट खनिज प्रचुर मात्रा में है।

बिहार के प्रमुख खनिज (Major minerals of Bihar)

बिहार में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के खनिजों का विवरण निम्नलिखित है—

चूना पत्थर	<ul style="list-style-type: none"> ● चूना पत्थर बिहार के पश्चिमी भाग में विंध्यन शैल समूहों में भारी जमाव के रूप में पाया जाता है। ● बिहार में चूना पत्थर का प्रयोग सीमेंट के निर्माण में कच्चे माल के रूप में किया जाता है। ● बिहार में गुणवत्तायुक्त उत्तम श्रेणी का चूना पत्थर रोहतास की पहाड़ियों, कैमूर पठार तथा मुंगेर में मिलता है। ● रोहतास में यह मुख्यतः सोन घाटी के पश्चिम में पाया जाता है तथा इस जिले में चूना पत्थर की असीमित उपलब्धता के कारण यहाँ सीमेंट के दो बड़े कारखाने भी हैं। ● रोहतास जिला में चूना पत्थर का कुल अनुमानित भंडार लगभग 21.085 मिलियन टन है।
पायराइट	<ul style="list-style-type: none"> ● भारत में बिहार ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ पायराइट का उचित भंडार है। ● भारतीय खनिज ब्यूरो (Indian Mineral Bureau) की रिपोर्ट के अनुसार देश का 95 प्रतिशत पायराइट का संचित भंडार बिहार में है और बिहार देश में अकेला 95% पायराइट का उत्पादन भी करता है। ● पायराइट गंधक का स्रोत होता है एवं इसका उपयोग पेट्रोलियम शोधन, सुपर फास्फेट, सल्फर एसिड, रेयोन, ठोस रबड़, चीनी बनाने तथा उर्वरक उद्योग में किया जाता है। ● रोहतास के आमझौर में केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रम के रूप में 'पायराइट फास्फेट एंड केमिकल्स लिमिटेड' (PPCL) की स्थापना की गई जहाँ इस खनिज को उपयोग में लाकर बड़े पैमाने पर उर्वरक का उत्पादन किया जाता है।

बिहार : औद्योगीकरण एवं नियोजन (Bihar : Industrialization and Planning)

किसी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत जब कच्चे पदार्थों को उचित एवं सुलभ तकनीक के माध्यम से उसके स्वरूप में परिवर्तन लाकर अधिक उपयोगी बना देना तथा निर्मित पदार्थों का उचित तरीकों से रख-रखाव करना इत्यादि उद्योग के अंतर्गत आता है। इनका विस्तृत रूप औद्योगीकरण कहलाता है।

- किसी अर्थव्यवस्था में औद्योगीकरण एवं नियोजन हेतु निम्नलिखित की आवश्यकता होती है—
 - ◆ सुगमतापूर्वक कच्चे माल की प्राप्ति
 - ◆ अत्यधिक कुशल श्रमिकों की आवश्यकता
 - ◆ उचित आवागमन मार्ग एवं परिवहन का साधन
 - ◆ उचित मात्रा में पूंजी की आवश्यकता
 - ◆ निर्मित वस्तुओं की बिक्री हेतु विस्तृत बाजार की सुविधा
- अर्थव्यवस्था के अंतर्गत निर्माण-बिनिर्माण समेत उद्योग को द्वितीयक क्षेत्र कहा जाता है।
- बिहार में सकल घरेलू उत्पादन में उद्योग (द्वितीयक) क्षेत्र का हिस्सा 18.1 प्रतिशत है। जबकि भारत में औसतन इसका हिस्सा 29.02% है। इस तरह अगर सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो बिहार में आधारभूत आवश्यकताओं की कमी के चलते उद्योग क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है।

कृषि आधारित उद्योग (Agriculture based industries)

बिहार में मैदानी इलाकों का क्षेत्रफल अधिक होने के फलस्वरूप कृषि पर आधारित उद्योगों की संभावना बढ़ जाती है। लेकिन आधारभूत औद्योगिक संरचना के अभाव में कृषि पर आधारित उद्योग का भी बृहत् मात्रा में विकास नहीं हो पाया है। वर्तमान में बिहार में निम्नलिखित उद्योग जो कृषि पर आधारित हैं—

- (फूड प्रोसेसिंग उद्योग) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
- जूट एवं उसपर आधारित वस्त्र उद्योग
- चावल मिल उद्योग
- दाल मिल उद्योग इत्यादि
- चीनी मिल उद्योग

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (Food processing industry)

यह उद्योग मुख्यतः कृषि एवं पशुपालन पर आधारित है जिसके अंतर्गत गेहूँ, मक्का, चावल, दुग्ध उत्पाद, खाद्य तेल, फल एवं मखाना इत्यादि आते हैं। आर्थिक सर्वेक्षण (2016-17) के मुताबिक बिहार में अगस्त, 2016 तक खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की लगभग 407 इकाईयाँ स्थापित हुईं, जिनमें से 278 इकाईयाँ ही सुचारु रूप से कार्यरत हैं। इन सभी इकाइयों में 48404 लोगों को रोजगार की प्राप्ति हो रही है।

- प्रोटीन एवं कार्बोहाइड्रेट की प्रचुर मात्रा मखाना में पाई जाती है, जिसकी खेती मुख्यतः सीतामढ़ी, मधुबनी एवं दरभंगा में की जाती है। मखाना शोध संस्थान दरभंगा में स्थापित है। इसके अलावा मुजफ्फरपुर एवं वैशाली में लीची आधारित, जबकि रोहतास एवं कैमूर में अमरूद आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापित है।
- बिहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को विस्तृत रूप प्रदान करने हेतु निम्नलिखित योजनाएँ क्रियान्वित हैं—
 - ◆ शीतगृह योजना- ₹ 5 करोड़ तक सब्सिडी
 - ◆ फूड पार्क योजना- कुल लागत का 30% सब्सिडी जिसकी अधिकतम मात्रा ₹ 50 करोड़। हाल ही में बक्सर में एक फूड पार्क की स्थापना की जा रही है।

ऊर्जा किसी भी राज्य की आर्थिक संवृद्धि व विकास के लिये अत्यंत आवश्यक है। बगैर इसके किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि (विशेषकर उत्पादन संबंधी) संपन्न नहीं हो सकती है। इस संदर्भ में बिहार अत्यंत पिछड़ा हुआ है, विशेषकर वर्ष 2000 में बँटवारे के बाद ऊर्जा संपन्न क्षेत्रों के झारखंड में चले जाने के कारण। हालाँकि हाल के वर्षों में बिहार के ऊर्जा परिदृश्य में सुधार हुआ है, लेकिन फिर भी अन्य राज्यों की तुलना में अत्यंत कम है। आज भी बिहार को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करीब 70% बिजली केंद्र सरकार की विद्युत उत्पादन इकाइयों से क्रय करनी पड़ती है।

वर्तमान ऊर्जा परिदृश्य एवं संभावनाएँ (Current energy scenario and possibilities)

- आर्थिक समीक्षा (2016-17 बिहार) के अनुसार बिहार में प्रति व्यक्ति विद्युत की उपभोग दर 258 kwh है, जबकि अक्टूबर 2016 तक राज्य में विद्युत की कुल उपलब्धता 3769MW रही है।
- अगर जिलेवार विद्युत उपभोग (प्रति व्यक्ति) की बात करें तो सबसे अधिक विद्युत का उपभोग पटना (4197 kwh) में होता है, इसके बाद क्रमशः गया (1214 kwh) व मुजफ्फरपुर (916 kwh) का स्थान है। वहीं न्यूनतम उपभोग के संदर्भ में शिवहर (50 kwh), अरवल (95 kwh) तथा शेखपुरा (136 kwh) क्रमशः पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर हैं।

ज़िला	प्रति व्यक्ति उपभोग (kwh)		ज़िला	प्रति व्यक्ति उपभोग (kwh)	
	2014-15	2015-16		2014-15	2015-16
पटना	3959	4197	वैशाली	444	586
नालंदा	672	813	दरभंगा	381	482
भोजपुर	380	494	मधुबनी	325	407
बक्सर	276	351	समस्तीपुर	343	453
रोहतास	625	785	बेगूसराय	370	452
कैमूर	358	432	मुंगेर	255	310
गया	1003	1214	शेखपुरा	114	136
जहानाबाद	216	273	लखीसराय	171	213
अरवल	69	95	जमुई	167	191
नवादा	161	286	खगड़िया	134	180
औरंगाबाद	321	497	भागलपुर	628	714
सारण	459	605	बाँका	161	215
सीवान	233	291	सहरसा	185	282
गोपालगंज	195	294	सुपौल	185	264
पश्चिम चंपारण	260	402	मधेपुरा	165	235
पूर्वी चंपारण	341	428	पूर्णिया	358	382
मुजफ्फरपुर	735	916	किशनगंज	143	188
सीतामढ़ी	201	270	अररिया	161	207
शिवहर	33	50	कटिहार	188	255

स्रोत: आर्थिक समीक्षा (2016-17), बिहार सरकार

बिहार : परिवहन एवं संचार (Bihar : Transport and Communication)

किसी भी राज्य के विकास व संवृद्धि के लिये वहाँ एक उपयुक्त परिवहन एवं संचार प्रणाली का होना अत्यंत आवश्यक होता है। हालाँकि इस प्रणाली की सघनता क्षेत्र-विशेष के भौगोलिक व जलवायविक कारकों से प्रभावित होती है, विशेषकर सड़क। विगत दशक में बिहार की सड़कों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। बिहार में परिवहन के साधनों में रेल, वायु तथा जल परिवहन प्रमुख हैं।

सड़क परिवहन (Road transport)

- बिहार में सड़क परिवहन के अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रांतीय राजमार्ग, जिला सड़कें तथा ग्रामीण सड़कों को शामिल किया जाता है।
- बिहार सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण (2016-2017) के अनुसार सितंबर 2016 तक राज्य में राष्ट्रीय राजमार्गों (National Highways) की कुल लंबाई 4621 किमी., प्रांतीय राजमार्गों की कुल लंबाई 4253 किमी. तथा प्रमुख जिला सड़कों की कुल लंबाई 11054 किमी. है।

बिहार में सड़क की स्थिति (सितंबर, 2016 तक)						
सड़क के प्रकार	राष्ट्रीय राजमार्ग		प्रांतीय राजमार्ग		प्रमुख जिला सड़कें	
	लंबाई किमी.	%	लंबाई किमी.	%	लंबाई किमी.	%
एक लेन की सड़क (3.75 मी. चौड़ाई)	618	13.4	772	18.2	5933	53.7
मध्यवर्ती लेन की सड़क (5.50 मी. चौड़ाई)	656	14.2	575	13.5	3372	30.5
दो लेन की सड़क (7.0 मी. चौड़ाई)	1899	41.1	2882	67.8	1562	14.1
दो लेन से अधिक की सड़क (7 मी. से अधिक चौड़ाई)	1414	30.6	24	0.6	187	1.7
अन्य	34	0.7	—	—	—	—
कुल	4621	100.0	4253	100.0	11054	100.0

आर्थिक सर्वेक्षण (2016-17), बिहार सरकार

- कुल सड़क नेटवर्क (राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रांतीय राजमार्ग तथा प्रमुख जिला सड़कें) के संदर्भ में पटना (5.8%), गया (4.9%), सुपौल (4.3%), नालंदा (4.1%) तथा मुजफ्फरपुर (4.0%) आगे हैं।
- शिवहर (0.7%), मुंगेर (0.8%) तथा लखीसराय (0.9%) सड़कें नेटवर्क के संदर्भ में सबसे पिछड़े जिले हैं।
- वर्तमान में बिहार में कुल 40 राष्ट्रीय राजमार्ग हैं।

बिहार में प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग	
राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या	स्थान
2	मोहनिया-सासाराम-औरंगाबाद-डोभी
19	छपरा-हाजीपुर-पटना

बिहार : जनगणना-2011 (Bihar : Population-2011)

सर्वप्रथम बिहार में जनगणना की शुरुआत वर्ष 1872 में हुई थी। हालाँकि नियमित जनगणना (प्रत्येक दस वर्ष के अंतराल पर) की शुरुआत वर्ष 1881 में हुई, जो तब से निरंतर हो रही है। इस क्रम में वर्ष 2011 की जनगणना बिहार की 14वीं जनगणना है। इस जनगणना से संबंधित महत्वपूर्ण आँकड़े व तथ्य इस प्रकार हैं—

कुल जनसंख्या (Total population)

- जनगणना, 2011 के अंतिम आँकड़ों के अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या 10,40,99,452 है। इसमें पुरुषों की संख्या 5,42,78,157 (52.14%) है, जबकि महिलाओं की संख्या 4,98,21,295 (47.86%) है।
- कुल जनसंख्या के संदर्भ में बिहार देश में तीसरे स्थान पर है। यहाँ देश की कुल जनसंख्या का 8.60% जनसंख्या निवास करती है।
- सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला पटना (58,38,465) है, जबकि न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला शेखपुरा (6,36,342) है।

सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले			न्यूनतम जनसंख्या वाले जिले		
क्रम	जिला	जनसंख्या	क्रम	जिला	जनसंख्या
1.	पटना	58,38,465	1.	शेखपुरा	6,36,342
2.	पूर्वी चंपारण	50,99,371	2.	शिवहर	6,56,246
3.	मुजफ्फरपुर	48,01,062	3.	अरवल	7,00,843
4.	मधुबनी	44,87,379	4.	लखीसराय	10,00,912
5.	गया	43,91,418	5.	जहानाबाद	11,25,313

ग्रामीण जनसंख्या (Rural population)

- कुल जनसंख्या: 9,23,41,436 (88.71%)
- पुरुष जनसंख्या: 4,80,73,850
- महिला जनसंख्या: 4,42,67,586
- सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाला जिला पूर्वी चंपारण (46,98,028) है, जबकि न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या वाला जिला शेखपुरा (5,27,340) है।

सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले जिले			न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या वाले जिले		
क्रम	जिला	जनसंख्या	क्रम	जिला	जनसंख्या
1.	पूर्वी चंपारण	46,98,028	1.	शेखपुरा	5,27,340
2.	मुजफ्फरपुर	43,27,625	2.	शिवहर	6,28,130
3.	मधुबनी	43,25,884	3.	अरवल	6,48,994
4.	समस्तीपुर	41,13,769	4.	लखीसराय	8,57,901
5.	गया	38,09,817	5.	मुंगेर	9,87,645

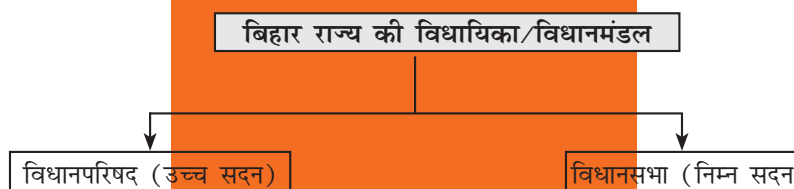
सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशतता वाले जिले		
क्रम	जिला	प्रतिशत
1.	समस्तीपुर	96.53%
2.	बांका	96.50%
3.	मधुबनी	96.40%

बिहार : राजव्यवस्था एवं प्रशासन (Bihar : Governance and Administration)

गणतांत्रिक प्रांत के रूप में बंगाल से अलग होकर बिहार राज्य का गठन 22 मार्च, 1912 ई. को हुआ, जिसमें उड़ीसा भी सम्मिलित था। आगे चलकर 1 अप्रैल, 1936 ई. को उड़ीसा एवं 15 नवंबर, 2000 ई. को झारखंड से अलग होकर बिहार स्वतंत्र प्रांत का रूप लिया परिणामस्वरूप अब बिहार का स्थान भारत में जनसंख्या की दृष्टि से तीसरा जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से 13वाँ है। हालाँकि झारखंड संयुक्त बिहार का लगभग 42.35% भाग लेकर अलग हुआ।

राज्यव्यवस्था के सुदृढ़ रूप से संचालन हेतु राज्य प्रशासन को मुख्यतः तीन वर्गों में बाँटा गया है:

- राज्य विधायिका
- राज्य कार्यपालिका
- राज्य न्यायपालिका



15.1 बिहार विधानपरिषद (Bihar Legislative Council)

राज्य की विधायिका में विधानपरिषद का गठन 7 फरवरी, 1921 को हुआ, जिसमें उड़ीसा भी सम्मिलित था। वर्तमान में पृथक् बिहार विधानपरिषद है, जिसमें कुल सदस्यों की संख्या 75 है। इन सदस्यों की नियुक्ति हेतु निम्न प्रावधान हैं, जैसे—

- कुल सदस्यों का 1/3 विधानसभा के सदस्यों द्वारा चुना जाता है।
- सदस्यों का 1/3 पंजीकृत संस्थाओं द्वारा चुना जाता है।
- सदस्यों का 1/12 पंजीकृत स्नातकों द्वारा चुना जाता है, जो कम-से-कम तीन वर्ष पूर्व स्नातक की उपाधि पूर्ण कर चुका हो।
- सदस्यों का 1/12 शिक्षक प्रतिनिधियों द्वारा चुना जाता है, जो कम-से-कम तीन वर्ष पढ़ाने का अनुभव रखता है।
- सदस्यों का 1/6 भाग राज्यपाल द्वारा मनोनीत किया जाता है, जो आवश्यक रूप से निम्न क्षेत्रों में ख्याति प्राप्तकर्ता हों, जैसे— कला, साहित्य, विज्ञान, समाज सेवा एवं सहकारिता।

बिहार विधानपरिषद में सदस्य बनने के लिये निम्न योग्यताओं का पालन करना आवश्यक है। जैसे— बिहार का स्थायी निवासी हो, 30 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो, राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो, पागल या दिवालिया घोषित न हो।

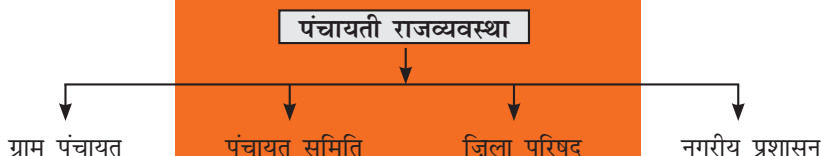
बिहार विधानपरिषद एक स्थायी सदन है, जिसमें सदस्यों का चुनाव छः वर्ष के लिये किया जाता है। साथ-ही-साथ 1/3 सदस्यों को प्रत्येक दो वर्ष बाद प्रतिस्थापित करके उसके स्थान पर नए सदस्यों का चुनाव किया जाता है। विधानपरिषद की अध्यक्षता उपस्थित सदस्यों द्वारा निर्वाचित सभापति द्वारा की जाती है। वर्तमान में बिहार विधानपरिषद के अध्यक्ष श्री अवधेश नारायण सिंह हैं। जबकि उपाध्यक्ष मो. हारून रशीद हैं।

15.2 बिहार विधानसभा (Bihar Legislative Assembly)

बिहार राज्य विधानमंडल में विधानसभा को निम्न सदन कहा जाता है। इसमें सदस्यों की कुल संख्या 243 है। एक सदस्य जो एंग्लो-इंडियन समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है, उसका मनोनयन राज्यपाल द्वारा किया जाता है। हालाँकि नवंबर,

बिहार : पंचायती राजव्यवस्था (Bihar : Panchayati Raj System)

बिहार में पंचायती राजव्यवस्था सर्वप्रथम “बिहार पंचायत समिति एवं जिला परिषद अधिनियम, 1961 के तहत अस्तित्व में आया। जिसको 17 फरवरी, 1962 को कानून का दर्जा दिया गया।



भारतीय संविधान में 73वें संविधान संशोधन 1992 के तहत पंचायती राजव्यवस्था को संविधान की 11वीं अनुसूची में जोड़ा गया। इसी संदर्भ में बिहार पंचायती राज अधिनियम, 1993 में ही पारित किया गया तथा पंचायती राजव्यवस्था के अंतर्गत त्रि-स्तरीय प्रशासनिक व्यवस्था कायम की गई। जैसे-ग्राम पंचायत, पंचायत समिति एवं जिला परिषद।

ग्राम पंचायत (Gram Panchayat)

पंचायती राजव्यवस्था के अंतर्गत सबसे निचले स्तर पर प्रशासनिक कार्यवाही के संचालन हेतु ग्राम पंचायत का गठन किया गया है। बिहार में सामान्यतः लगभग 7000 आबादी पर एक ग्राम पंचायत की व्यवस्था की गई है। पंचायत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने हेतु बिहार पंचायती राज अधिनियम, 2006 में सम्पूर्ण सीटों में से 50 प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है। ग्राम पंचायत में कार्यकारिणी के प्रधान को मुखिया कहा जाता है। साथ ही कार्यकारिणी में आठ अन्य सदस्य होते हैं।

- बिहार में ग्राम पंचायत के मुख्यतः छः विभाग होते हैं जैसे- ग्राम सभा, कार्यकारिणी समिति, ग्राम रक्षा दल, ग्राम सेवक, मुखिया, ग्राम कचहरी। प्रत्येक पंचायत की अवधि सामान्यतः 5 वर्ष की होती है। जिसकी गणना उसके प्रथम अधिवेशन से की जाती है। पंचायत सदस्य बनने हेतु सामान्यतः न्यूनतम उम्र 21 वर्ष होनी चाहिये।
- ग्राम सभा को ग्राम पंचायत की विधायिका कहा जाता है। जिसकी सदस्यता हेतु प्रत्येक ग्रामीण की आयु कम-से-कम 18 वर्ष होनी चाहिये। ग्राम सभा की बैठक वर्ष में दो बार होनी अनिवार्य है। जबकि साल में 4 बार बैठकें बुलाने का प्रावधान है।
- ग्राम पंचायत में न्यायिक कार्यों से संबंधित कार्यवाही के लिये ग्राम-कचहरी होती है, जिसका प्रधान प्रत्यक्षतः निर्वाचित सरपंच होता है। सरपंच को सलाह-मशविरा के लिये एक न्याय मित्र होता है। ग्राम कचहरी के पास न्यूनतम रूप में फौजदारी एवं दीवानी मामलों से संबंधित निर्णय करने का अधिकार होता है। वर्तमान में बिहार में ग्राम कचहरियों की अनुमानित संख्या 8398 है। मुखिया एवं कार्यकारिणी समिति का कोई भी सदस्य ग्राम कचहरी का सदस्य नहीं बन सकता है।
- सामान्यतः पंचायतों को वित्तीय सहायता राज्य की संचित निधि से प्राप्त होती है। जिसके लिये माध्यम के रूप में पंचायत वित्त आयोग होता है।

पंचायत समिति (Panchayat Samiti)

बिहार में प्रखंड स्तर पर प्रशासन को संचालित करने के लिये पंचायत समिति का गठन किया गया है। पंचायत समिति के सदस्यों में निम्नलिखित व्यक्ति आते हैं, जैसे-

- | | |
|---|--|
| (1) प्रत्येक 5000 की आबादी पर एक सदस्य | (3) घोषित प्रत्येक प्रखंड में विधानसभा क्षेत्र के विधायक |
| (2) उस प्रखंड के ग्राम पंचायतों के मुखिया | (4) घोषित लोकसभा क्षेत्र के सांसद |

बिहार : शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलकूद (Bihar : Education, Health and Sports)

सरकार द्वारा समय-समय पर राज्य के अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा साक्षरता दर में वृद्धि हेतु प्रयास किये जाते हैं साथ-ही-साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिये गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्य सेवा भी राज्य सरकार द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। इसके अलावा खेलकूद को बढ़ावा देने के लिये आधारभूत सुविधाओं के साथ-साथ तरह-तरह के पुरस्कार भी सरकार द्वारा घोषित किया जाता है।

बिहार में शिक्षा व्यवस्था (Education system in Bihar)

केंद्र सरकार द्वारा प्रत्येक राज्य में साक्षरता दर में बढ़ोतरी हेतु समय-समय पर विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियावयन किया जाता है। जैसे- व्यस्क शिक्षा कार्यक्रम, 1979 तथा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यक्रम 5 मई, 1988 को क्रियावित किया गया है।

- बिहार में नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षण-संस्थानों में अग्रणी रहा है, जिसकी स्थापना प्राचीन काल में ही हुई।
- बिहार शिक्षा परियोजना परिषद की स्थापना, 1991 में की गई, जिसमें राज्य सरकार, केंद्र सरकार एवं यूनिसेफ का योगदान क्रमशः 1 : 2 : 3 के अनुपात में रहा। इसका उद्देश्य राज्य में औपचारिक शिक्षा को उच्च स्तर तक ले जाना तथा उसका संरक्षण एवं संवर्द्धन करना है। वर्तमान में शिक्षा पर खर्च हेतु केंद्र एवं राज्य सरकार की हिस्सेदारी क्रमशः 60 : 40 है।

बिहार में शिक्षा के विस्तार हेतु निम्न कार्यक्रम

(The following programme for the extension of education in Bihar)

- संकल्प योजना-** इस योजना के तहत शिक्षा को मुख्यधारा से जोड़ने हेतु 6-14 वर्ष के वे सभी बच्चे जो विद्यालय जाने में असमर्थ रहे हैं उन्हें विभिन्न प्रकार की सुविधा जैसे- 1-8 वर्ग तक निःशुल्क पाठ्य पुस्तक एवं शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।
- मुस्लिम बच्चों को खासकर जो विद्यालय से अज्ञात हो उन्हें शिक्षा-व्यवस्था से जोड़ने हेतु 'तालिमी मरकज अभियान' जबकि "उत्थान केंद्र" की शुरुआत महादलित बच्चों को शिक्षित बनाने हेतु की गई है।
- प्रखंड स्तर पर बालिकाओं को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने के लिये 'मीना मंच' कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।
- व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने हेतु अल्पसंख्यक बालिकाओं के लिये 'हुनर कार्यक्रम, औजार योजना तथा ज्ञानज्योति कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।
- मुख्यमंत्री पोशाक योजना जहाँ 6-8 वर्ष तक की बालिकाओं हेतु अनिवार्य है, तो वहीं नवम् वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिये मुख्यमंत्री साइकिल योजना चलाई जा रही है।

बिहार में स्थापित विश्वविद्यालय (Universities established in Bihar)

क्र.स.	राज्य विश्वविद्यालय का नाम	गठन का वर्ष
1.	पटना विश्वविद्यालय, पटना	1917
2.	बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर	1952
3.	तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर	1960
4.	कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा	1961
5.	मगध विश्वविद्यालय, गया	1962

विरासत के रूप में अगर देखा जाए तो बिहार में पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक गौरव के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता विद्यमान है, जैसे- बोधगया, राजगीर के मंदिर एवं इमारत तो पटना के ऐतिहासिक स्थल तथा पटना साहिब के पावन तीर्थ-स्थल आदि।

18.1 राज्य में पर्यटन एवं पर्यटक स्थल का स्वरूप (Nature of Tourism and Tourist Sites in The State)

पर्यटन को मनोरंजन का साधन माना जाता है। पर्यटन शब्द का प्रारंभिक प्रयोग 17वीं शताब्दी के मध्य से माना जाता है। बिहार की धरती पर्यटन की दृष्टि से प्रबल प्रतिभा की धनी रही है, क्योंकि बिहार में अनेक ऐतिहासिक स्मारक विद्यमान हैं, जिसका पर्यटन की दृष्टि से अतुलनीय महत्त्व रहा है।

सामान्यतः अगर व्यापक दृष्टि से देखा जाए तो बिहार में स्थानीय स्तर के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल विद्यमान हैं, जैसे-

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल (International tourist destinations)

बोधगया : इसे उरुवेला के नाम से भी जाना जाता है। यह फल्गु नदी के तट पर अवस्थित है। यहीं पर भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई। यूनेस्को द्वारा बोधगया अवस्थित महाबोधि मंदिर को जुलाई 2002 में विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित किया गया।

वैशाली : वैशाली जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की जन्मस्थली है। वैशाली में ही बौद्ध धर्म का द्वितीय सम्मेलन 'कालाशोक' के नेतृत्व (383 ई.पू.) में हुआ था। वैशाली में ही लिच्छवियों ने विश्व का प्रथम गणतंत्र स्थापित किया।

पटना : पाटलिपुत्र के रूप में स्थापना का श्रेय हर्यक वंश के शासक उदयन को जाता है। जबकि आधुनिक पटना का नामकरण 16वीं शताब्दी में शेरशाह सूरी द्वारा किया गया। पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति अशोक के नेतृत्व में संपन्न हुई। गुरु गोविंद सिंह का जन्म, जो सिखों के 10वें गुरु थे, पटना में सन् 1664 में हुआ। अनाजों के कुशलतम भंडारण हेतु पटना गोलघर का निर्माण कैप्टन जॉन गार्स्टिन द्वारा 1786 में किया गया। सदाकत आश्रम पटना में पश्चिमी इलाकों में स्थित है। हनुमान मंदिर पटना जंक्शन के बगल में अवस्थित है। राष्ट्रीय संस्थान के रूप में खुदाबख्श लाइब्रेरी की स्थापना 1891 ई. में की गई जो पटना में अवस्थित है।

नालंदा : अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा एवं ज्ञान केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमार गुप्त द्वारा की गई, जहाँ पर चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 12 वर्षों तक बौद्ध धर्म से संबंधित शिक्षा ग्रहण की। हाल ही में सरकार द्वारा एक शोध-कार्य हेतु नव-नालंदा महाविहार की स्थापना की गई है।

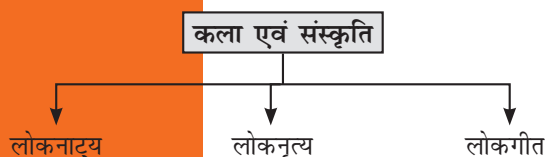
विक्रमशिला : प्राचीन कालीन स्थल विक्रमशिला, जो भागलपुर जिला में अवस्थित है। यहीं पर पाल वंशीय शासक धर्मपाल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर का विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। जहाँ पर विदेशी पर्यटक एवं शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण हेतु आते रहे हैं।

राजगीर : प्राचीन काल में राजगीर का नाम गिरिव्रज था। यह सबसे बड़े साम्राज्य मगध की राजधानी थी। प्रथम बौद्ध संगीति अजातशत्रु के नेतृत्व में यहीं संपन्न हुई। राजगीर में पर्यटन की दृष्टि से विश्व शांति स्तूप बहुत ही सराहनीय है। यहाँ आज भी विरासत के तौर पर गर्म जल के झरने का रूप दर्शनीय है।

आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन की पहचान हेतु ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के पर्व-त्यौहार, मेला, रहन-सहन आदि का योगदान हाँता है। जैसा कि बिहार में प्राचीनकालीन मौर्यकला से लेकर मध्यकालीन अफगान कला तथा आधुनिक काल में पटना एवं मधुबनी की कला अति सराहनीय रहा है। इसके अलावा बिहार की भूमि से ही दो महानतम धार्मिक परंपरा बौद्ध एवं जैन का उद्भव हुआ, जिसका प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात रहा।

लोकनाट्य (Folk Drama)

बिहार के सांस्कृतिक परंपरा में लोकनाट्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। विभिन्न शुभ एवं मांगलिक कार्यक्रमों के अवसर पर तथा विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों के अवसर पर इसका आयोजन किया जाता है। प्रायः लोकनाट्य कार्यक्रम के संचालन हेतु मंच की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि यह कार्यक्रम कुछ घंटों के लिये रात्रि में प्रस्तुत किया जाता है। सामान्यतः लोकनाट्य में गीत-संगीत, वाद-संवाद, कथानक, अभिनय एवं नृत्य का आयोजन होता है।



बिहार में प्रचलित महत्त्वपूर्ण लोकनाट्य (Important folk drama popular in Bihar)

लोकनाट्य	महत्त्व/उद्देश्य
1. डोमकच	इसमें केवल महिलाएँ भाग लेती हैं। सामान्यतः इसका आयोजन विवाह-समारोह के दौरान जब वर पक्ष की तरफ से बारात निकल जाती है, तो रात्रि में महिलाएँ घर-परिवार की सुरक्षा हेतु डोमकच का पाठ करती हैं, जिसमें पुरुषों के कपड़े पहनकर पुलिस, डोमिन, अधिकारी आदि बनती हैं।
2. जट-जाटिन	इसमें मुख्यतः कुँआरी लड़की (महिलाएँ) भाग लेती हैं। इसका आयोजन सावन महीने से लेकर कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष तक होता है। इसमें जट पक्ष में लड़कियाँ दुल्हे के कपड़ों में जबकि जाटिन पक्ष में लड़कियों को दुल्हन की तरह सजाकर नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।
3. विदेशिया	इसमें केवल पुरुष कलाकार जो महिलाओं की भी भूमिका निभाते हैं, शामिल होते हैं। इसके प्रारंभकर्ता भिखारी ठाकुर थे। इसमें जोकर, लवंडा आदि दर्शकों को हँसाने का काम करते हैं।
4. किरतनियाँ	इसमें खासकर श्रीकृष्ण के लीलाओं का गुणगान एवं नाट्य का स्वरूप किया जाता है, जिसमें ढोलक, झाल, हारमोनियम आदि का प्रयोग किया जाता है।
5. सामा-चकेवा	इस लोकनाट्य में पात्र भाई-बहन की भूमिका में होता है। यह लोकनाट्य कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष में सप्तमी तिथि से पूर्णिमा तिथि तक आयोजित होता है। इसमें प्रायः कुँआरी कन्याएँ पाठ प्रस्तुत करती हैं इसके पात्र प्रायः मिट्टी के बने होते हैं। जैसे- वृंदावन, चुगला, सतभइया, ग्वालिन आदि।
6. भकुली बंका	इसका आयोजन प्रायः जट-जाटिन के साथ ही सावन माह से कार्तिक माह तक होता है। इस लोकनाट्य में सामान्यतः ग्रामीण जीवन का परिचय, आचार-विचार दिखता है। इसके निम्नलिखित पात्र होते हैं- टिहुली, अंका, बंका, दीदी एवं भकुली।

बिहार सरकार 26 जनवरी, 15 अगस्त और अन्य विशेष अवसरों पर विभिन्न क्षेत्रों में राज्य और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने वाले बिहार के नागरिकों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करती है। इन पुरस्कारों के तहत सम्मान पाने वाले व्यक्ति को स्मृति चिह्न, शॉल एवं नकद इनाम उपहारस्वरूप दिया जाता है। कुछ पुरस्कार एवं सम्मान किसी विशेष संस्था द्वारा भी आयोजित किये जाते हैं जिनकी तरफ से पुरस्कार प्रदान किया जाता है; जैसे- संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी, भोजपुरी अकादमी इत्यादि।

विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि के लिये दिये जाने वाले बिहार से संबंधित 'पुरस्कार एवं सम्मान' का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

बिहार गौरव सम्मान (Bihar gaurav award)

- बिहार गौरव सम्मान 'प्रतिवर्ष उन बिहारियों को प्रदान किया जाता है जिनकी वजह से बिहार का नाम देश-दुनिया में रोशन हुआ हो।'
- इसकी शुरुआत की घोषणा 2009 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सुपर-30 के सफल छात्रों के सम्मान समारोह के दौरान की।
- यह पुरस्कार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं और स्पर्द्धाओं में अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय देने वाले व्यक्ति को भी दिया जाता है।
- बिहार गौरव का पहला पुरस्कार 'शितिकंठ' को दिया गया जिसके तहत पुरस्कार स्वरूप 1.50 लाख रुपए प्रदान किये गए।

बिहार कला पुरस्कार (Bihar art award)

- बिहार राज्य कला पुरस्कार प्रतिवर्ष 18 अक्टूबर को बिहार कला दिवस के अवसर पर प्रदान किया जाता है।
- यह पुरस्कार बिहार के कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रदान किया जाता है।
- इसके अंतर्गत कई तरह के पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं जिनमें राष्ट्रीय सम्मान, लाइफटाइम अचीवमेंट सम्मान, राधा मोहन पुरस्कार इत्यादि प्रमुख हैं।
- बिहार कला पुरस्कार 2017-18 के तहत, डॉ. शारदा सिन्हा एवं परेश मैती को राष्ट्रीय सम्मान (2017-18) तथा किरण कांत वर्मा एवं प्रो. श्याम शर्मा को लाइफटाइम अचीवमेंट सम्मान (2017-18) दिया गया।

बिहार शताब्दी पत्रकारिता सम्मान (Bihar centenary journalism award)

- शताब्दी वर्ष, 2012 में बिहार सरकार ने पत्रकारिता के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वालों को पुरस्कृत करने का फैसला किया।
- बिहार के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक विकास तथा महिलाओं, अल्पसंख्यकों और वंचित वर्गों के उत्थान से संबंधित समाचार, लेख, विश्लेषण, प्रसारण आदि के लिये यह पुरस्कार दिया जाएगा।
- शताब्दी पत्रकार सम्मान के नाम से शुरू होने वाले इस सम्मान के अंतर्गत कई प्रकार के सम्मानों की नियमावली तैयार की गई है जो निम्नलिखित है-

(i) शिवपूजन सहाय सम्मान

- इस सम्मान से प्रिंट मीडिया के उन पत्रकारों में से किसी एक की महत्वपूर्ण उपलब्धि को मान्यता प्रदान करते हुए सम्मानित किया जाएगा, जिनके प्रकाशित समाचार/लेख/विश्लेषण आदि बिहार के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक विकास तथा महिलाओं, अल्पसंख्यकों और वंचित वर्गों के उत्थान से संबंधित हों।

कोई भी राज्य चाहे वह विकसित हो या विकासशील वह किसी-न-किसी मूलभूत समस्याओं से घिरा रहता है। कुछ समस्याएँ ऐसी होती हैं जो हमेशा बनी रहती हैं, जैसे- स्वास्थ्य की समस्या, वृद्धजनों की समस्या, बच्चों एवं महिलाओं की समस्या, गरीबी, बेरोजगारी इत्यादि। इसके अलावा सड़कों का रखरखाव, नई सड़कों का निर्माण, पुल-पुलियों का निर्माण, कृषि क्षेत्र, बिजली, पानी इत्यादि की समुचित व्यवस्था। इन कार्यों को अनवरत चलाने के लिये राज्य सरकार बड़े स्तर पर योजनाओं का निर्माण करती है और उन्हें लागू करती है। जैसा कि हमें पता है कि सतत् विकास जीवन का नियम है, और इसी सूत्र को मद्देनजर रखते हुए कोई भी राष्ट्र अथवा राज्य विभिन्न योजनाओं के माध्यम से हर क्षेत्र में बेहतर करने की कोशिश करता है। सतत् तथा समावेशी विकास प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि राज्य में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी तथा स्वास्थ्य समस्याओं जैसे दुष्चक्र पर काबू पाया जाए एवं अन्य कमियों को भी दूर किया जाए। बिहार भी इन समस्याओं एवं कमियों से अछूता नहीं है, फलस्वरूप बिहार सरकार विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से इन कमियों से निजात पाने की कोशिश करती रही है तथा कुछ ऐसे भी कार्यक्रम चला रही है जिससे विकास को रफ्तार मिले। विकसित बिहार के सात निश्चय सूत्र इन्हीं में से एक है। बिहार में चल रही विभिन्न नई-पुरानी योजनाओं का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है-

कुशल युवा कार्यक्रम (Kushal yuva program)

- इस कार्यक्रम की शुरुआत 2 अक्टूबर, 2016 को बिहार के सात निश्चयों में से एक “आर्थिक हल युवाओं को बल” पहल के तहत की गई।
- बिहार सरकार के श्रम विभाग द्वारा संचालित की जाने वाली यह योजना राज्य के मूल निवासियों (15-25 वर्ष के 10वीं या 12वीं पास बेरोजगार युवाओं) को भाषा (हिन्दी/अंग्रेजी) एवं संवाद कौशल, बुनियादी कंप्यूटर ज्ञान एवं व्यवहार कौशल का प्रशिक्षण देने के लिये प्रतिबद्ध है।
- इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण की कुल अवधि 240 घंटे की होगी एवं पूरे राज्य में इसके सफल संचालन के लिये प्रत्येक प्रखंड में एक कौशल प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण किया जाएगा।
- बिहार सरकार के श्रम विभाग ने छात्रों को समान प्रशिक्षण देने हेतु महाराष्ट्र नॉलेज कॉरपोरेशन लिमिटेड (MKCL) से समझौता भी किया है।

बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना (Bihar student credit card scheme)

- यह योजना 2 अक्टूबर, 2016 को ‘आर्थिक हल युवाओं को बल’ पहल के तहत शुरू की गई।
- इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा या तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिये आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना है, जो 4 लाख तक का शिक्षा ऋण होगा।
- इस योजना का लक्ष्य राज्य के पाँच लाख विद्यार्थियों को शिक्षा ऋण उपलब्ध कराना है, जिसमें राज्य सरकार के द्वारा बैंकों से ब्याज सहित डिफॉल्ट की राशि की शत प्रतिशत गारंटी प्रदान की जाएगी।
- यह ऋण उच्च शिक्षा के सामान्य एवं विभिन्न व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रमों यथा- बी.ए./बी.एस.सी./इंजीनियरिंग/एम.बी.बी.एस./प्रबंधन/विधि आदि 36 प्रकार के पाठ्यक्रमों के लिये दी जा रही है।

मुख्यमंत्री विद्युत संबद्ध निश्चय योजना (Mukhyamantri vidyut sambandh nischay yojna)

- मुख्यमंत्री विद्युत संबद्ध निश्चय योजना ‘हर घर बिजली लगातार’ निश्चय के तहत 15 नवंबर, 2016 को शुरू की गई।
- इसका उद्देश्य राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अबाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना है तथा सभी परिवारों को विद्युत संबद्ध करना है।

किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के दृष्टिकोण से नवीनतम समसामयिकी घटनाक्रम का अहम योगदान रहता है। खासकर किसी राज्य विशेष की परीक्षा हो तो उसमें उस राज्य से संबंधित नवीनतम घटनाओं की जानकारी छात्रों के लिये आवश्यक है। बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के मद्देनजर इस अध्याय में भी बिहार राज्य से संबंधित पिछले एक वर्ष के सभी महत्वपूर्ण नवीनतम घटनाओं का समावेश करने का प्रयास किया गया है। राज्य से संबंधित पिछले एक वर्ष की महत्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

बिहार राज्य के राज्यपाल रह चुके रामनाथ कोविंद राष्ट्रपति बने
(Former governor of Bihar Ramnath Kovind became president)

- अगस्त 2015 से बिहार के राज्यपाल पद पर विराजमान रामनाथ कोविंद को भारत का 14वाँ राष्ट्रपति बनाया गया।
- 25 जुलाई, 2017 को उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जे.एस. खेहर ने भारत के राष्ट्रपति के पद की शपथ दिलाई।
- बिहार के राजनीतिक इतिहास में रामनाथ कोविंद पहले व्यक्ति हैं जो बिहार के राज्यपाल से सीधे राष्ट्रपति बने।

सत्यपाल मलिक बने बिहार के नए राज्यपाल (Satyapal Malik became new governor of Bihar)

- भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रह चुके सत्यपाल मलिक को 30 सितंबर, 2017 को बिहार का नया राज्यपाल नियुक्त घोषित किया गया। उन्होंने 4 अक्टूबर, 2017 को पद और गोपनीयता की शपथ ली।
- रामनाथ कोविंद के राष्ट्रपति बनने के बाद बिहार में राज्यपाल का पद रिक्त था और पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी को बिहार का अतिरिक्त प्रभार दिया गया था।
- सत्यपाल मलिक इससे पहले केंद्रीय राज्य मंत्री (संसदीय और पर्यटन), राज्यसभा सांसद और लोकसभा सांसद भी रह चुके हैं।

न्यायमूर्ति राजेंद्र मेनन ने पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली
(Justice Rajendra Menon took oath as chief justice of Patna high court)

- 15 मार्च, 2017 को न्यायमूर्ति राजेंद्र मेनन को पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ दिलाई गई।
- इससे पहले वे मध्यप्रदेश हाई कोर्ट के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश थे।
- इसके साथ ही पटना उच्च न्यायालय के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बनाया गया है।

मुख्यमंत्री ने बिहार राज्य कला पुरस्कार प्रदान किये (CM gave Bihar state art award)

- बिहार कला दिवस के अवसर पर 18 अक्टूबर, 2017 को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वर्ष 2017-18 के लिये राज्य के विभिन्न विधाओं के चुनिंदा 24 कलाकारों को बिहार राज्य कला पुरस्कार प्रदान किया।
- बिहार राज्य कला पुरस्कार के अंतर्गत राधामोहन पुरस्कार, युवा पुरस्कार, राष्ट्रीय सम्मान, लाइफटाइम एचीवमेंट पुरस्कार और अन्य पुरस्कार भी दिये जाते हैं।
- बिहार कला पुरस्कार 2017-18 के तहत राष्ट्रीय सम्मान से डॉ. शारदा सिन्हा (प्रदर्श कला) और परेश मैती (चाक्षुष कला) को सम्मानित किया गया।

बिहार एक ऐसा राज्य है जो प्राचीनकाल से ही विद्वानों एवं विभूतियों के मामले में धनी रहा है। जहाँ एक ओर बिहार के प्राचीन मनीषियों जैसे गौतम बुद्ध, महावीर, चाणक्य और आर्यभट्ट ने संपूर्ण विश्व पटल पर बिहार और भारत का नाम ऊँचा किया है वहीं दूसरी ओर जयप्रकाश नारायण, डॉ. राजेंद्र प्रसाद जैसे व्यक्तित्व ने बिहार को नयी दिशा देने का कार्य किया है। बिहार में कुँवर सिंह, पीर अली और अमर सिंह जैसे वीर भी पैदा हुए जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नागार्जुन, भिखारी ठाकुर, दिनकर, विद्यापति ने साहित्य के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व किया वहीं कला के मामले में विंध्यवासिनी देवी, शारदा सिन्हा, जगदंबा देवी इत्यादि का नाम जगजाहिर है। विश्वस्तर पर बिहार को नयी पहचान दिलाने वाले इन महान विभूतियों का परिचय निम्नलिखित है—

जयप्रकाश नारायण

- जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार के सारण ज़िले में सिताबदियारा नामक स्थान पर 11 अक्टूबर, 1902 ई. को हुआ।
- जयप्रकाश नारायण प्रसिद्ध समाज-सेवक, स्वतंत्रता सेनानी और महान राजनैतिक विचारक थे, इसलिये उन्हें 'लोकनायक' भी कहा जाता है।
- कॉंग्रेस समाजवादी दल की स्थापना करने के बाद उन्हें राष्ट्रीय स्तर के नेता की पहचान मिली लेकिन बाद में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने और 1975 में आपात स्थिति की घोषणा के बाद तत्कालीन सरकार के विरुद्ध 'संपूर्ण क्रांति' के आह्वान और उसकी सफलता ने उन्हें जन-जन के बीच लोकप्रिय बना दिया।
- समाज सेवा के लिये 1965 में उन्हें मैग्सेसे पुरस्कार एवं मरणोपरांत 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
- इनकी मृत्यु 8 अक्टूबर, 1979 को हृदय की बीमारी और मधुमेह के कारण हो गई।

राजकुमार शुक्ल

- राजकुमार शुक्ल बिहार के चंपारण ज़िले में मुरली भरहवा गाँव के निवासी थे।
- अंग्रेज़ों की तत्कालीन नील की खेती से जुड़ी तीन कठिया व्यवस्था के विरुद्ध उन्होंने आंदोलन की शुरुआत की और इसके लिये उन्होंने 1917 में महात्मा गांधी को चंपारण आने के लिये राजी किया।
- राजकुमार शुक्ल के अनुरोध पर ही गांधी जी चंपारण आए और चंपारण में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया।
- चंपारण किसान आंदोलन ही देश की आज़ादी का असली संवाहक बना था क्योंकि राजकुमार शुक्ल और महात्मा गांधी के नेतृत्व में वहाँ के किसानों से आंदोलन को जो धार मिली उसने देश को आज़ादी तक पहुँचा दिया।

निवारणचंद्र दास गुप्ता

- निवारणचंद्र दास गुप्ता पुरलिया ज़िला स्कूल के हेड मास्टर थे, साथ ही वे पुरलिया के मानद ज़िला मजिस्ट्रेट भी थे।
- उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किये गए 'असहयोग आंदोलन' में भाग लेने के लिये नौकरी छोड़ दी थी जिस कारण उन्हें जेल भेजा गया।
- जेल से छूटने के बाद उन्होंने अतुल चंद्र घोष के साथ मिलकर 'शिल्पाश्रम' की स्थापना की जहाँ आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस और राजेंद्र प्रसाद जैसे नेताओं ने कई दौर किये।
- वे 'मुक्ति' साप्ताहिक पत्रिका के भी संस्थापक-संपादक थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन और भाषा आंदोलन के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिहार विविधताओं से भरा राज्य है जिसकी अमिट छाप इस राज्य से संबंधित सभी पहलुओं पर पड़ती है।

24.1 बिहार द्वारा विशेष राज्य के दर्जे की माँग (Demand of Special State Status by Bihar)

बिहार द्वारा वर्ष 2000 में विभाजन के पश्चात् से ही विशेष राज्य के दर्जे की माँग हमेशा उठती रही है। इसको लेकर वर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार काफी सक्रिय व मुखर रहे हैं। कुछ हद तक यह माँग उचित भी है, क्योंकि झारखंड के अलग हो जाने के बाद सभी प्रमुख संसाधन वाले क्षेत्र उधर चले गए तथा बिहार संसाधन-विहीन हो गया, विशेषकर प्रमुख धात्विक खनिजों के संदर्भ में। इसके अतिरिक्त इसके उत्तरी-पूर्वी भाग में आने वाली प्रति वर्ष की बाढ़ से भी हमेशा अपार जन-धन की हानि होती है। अतः इन सब परिस्थितियों से बिहार को उबरने में यह विशेष राज्य का दर्जा सहायक हो सकता है।

इस संबंध में बिहार सरकार द्वारा 4 अप्रैल, 2006 को विधानसभा से सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित करके केंद्र सरकार को भेजा गया है, जिसमें अन्य 'विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त' (कुल 11) राज्यों के आधार पर ही बिहार को भी यह दर्जा देने की माँग की गई है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संविधान में विशेष राज्य के दर्जे का कोई प्रावधान नहीं है, लेकिन नीति आयोग (पूर्ववर्ती योजना आयोग) द्वारा समय-समय पर कुछ मानदंडों के आधार पर कुछ राज्यों को यह दर्जा प्रदान किया जाता रहा है। ये मानदंड निम्नलिखित हैं—

- भौगोलिक विलगाव वाले क्षेत्र
- अगम्यता वाले क्षेत्र
- संसाधनों की कमी वाले क्षेत्र
- आधारभूत संरचना की कमी वाले क्षेत्र

उल्लेखनीय है कि विशेष राज्य के दर्जे के अंतर्गत गाड़गिल-मुखर्जी को आधार बनाकर भारत सरकार द्वारा राज्यों को सहायता दी जाती है जिसमें कुल केंद्रीय सहायता 90% अनुदान के रूप में तथा 10% ऋण के रूप में दी जाती है।

बिहार के विशेष राज्य के दर्जे के लिये आधार

बिहार के विशेष राज्य के दर्जे के लिये आधार निम्नलिखित हैं—

- राज्य की बदहाल आर्थिक स्थिति
- आधारभूत संरचना की कमी
- प्रतिवर्ष आने वाली आपदा (बाढ़ व सूखा) के कारण व्यापक क्षति
- गरीबी व बेरोज़गारी की उच्च दर
- महत्वपूर्ण धात्विक संसाधनों की कमी

विशेष राज्य के दर्जे से संबंधित रघुराम राजन समिति की सिफारिश (Recommendation of Raghuram Rajan committee related to special state status)

इस समिति का गठन मई 2013 में किया गया था, जिसने 26 सितंबर, 2013 को अपनी रिपोर्ट सौंपी। इस समिति ने विशेष राज्य के दर्जे के लिये बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) को आधार बनाने की सिफारिश की, जिसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं—

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com



DrishtiIAS



YouTube Drishti IAS



drishtiiias



drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456